ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 17 अंक-22 फरवरी-II, 2017 (पाक्षिक) माउण्ट आबू 8.00

अठारह जनवरी 'मानव बंधुत्व दिवस'

हज़ारों लोग शरीक हुए तालकटोरा स्टेडियम में

विश्व शांति के लिए शांति की तरंगें फैलाते हुए सभी ने की शुभकामनाएँ

कार्यक्रम में वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. शुक्ला बहन, ब्र.कु. पुष्पा तथा अन्य ब्र.कु. बहनें राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराते हुए। सभा में राजयोग का अभ्यास करते हुए दिल्ली तथा आसपास के क्षेत्र के हज़ारों भाई बहनें।

दिल्ली-तालकटोरा स्टेडियम। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक, परमपिता शिव परमात्मा के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा की पुण्य स्मृति दिवस पर 'मानव बंधुत्व दिवस' का आयोजन किया गया। इसमें भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी, जाने-माने सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी अग्निवेश, पूर्व सी.बी.आई. डायरेक्टर डी.आर. कार्तिकेयन, जुदाह हयम सिनागोग प्रमुख ई.एल. मालेकर उपस्थित थे।

लालकृष्ण आडवाणी का अभिवादन करते हुए दादी कमलमणि। साथ में ब्र.कु. सुंदरी व अन्य।

स्वामी अग्निवेश जो कि बंधुआ मुक्ति मोर्चा के संस्थापक हैं, ने इस अवसर पर ऋगवेद के कुछ मंत्र उच्चारित कर बंधुत्व भाव के महत्व को सबके सामने रखा। उन्होंने कहा कि हम एक परमात्मा की बात करते हैं, फिर तो हम सब उसके संतान हो गये। इसलिए हमारा यह कर्त्तव्य है कि हमें एक साथ रहकर एक हिंसा रहित, घृणा रहित समाज की स्थापना करनी चाहिए। जिसमें जाति-धर्म का भेद ना हो। उन्होंने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि आज आडम्बरों के कारण बच्चियों की बलि चढ़ाई जा रही है। इस तरह के कुकृत्यों को रोककर वसुधैव कुटुम्बकम के साथ जीना चाहिए।

डॉ. कार्तिकेयन ने कहा कि आज के दिन प्रजापिता ब्रह्मा ने अपने पार्थिव देह का त्याग कर सूक्ष्म शरीर लिया। इस अवसर पर हम सबको एक साथ एक प्रतिज्ञा लेकर बंधुत्व भाव के साथ जीवन जीना चाहिए। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ की एक पुस्तक सबके सामने रखी और उसकी कुछ लाइनें भी पढ़ीं जिसमें ब्रह्माबाबा के कुछ सिद्धान्त थे जो आज के समाज को एक नई दिशा देने के प्रेरक हैं।

राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा ने विश्व एक परिवार की बात को स्पष्ट करते हुए कहा कि हमारे शरीर को चलाने वाली चेतन सत्ता, जिसको हम आध्यात्मिक भाषा में आत्मा कहते हैं। सभी धर्मों में उसको अलग-अलग नाम से जानते हैं। जो मनुष्य रूपी शरीर में विराजित होकर कर्म करती है। वो अजर अमर अविनाशी है। आत्मिक नाते से हम सब परमात्मा के बच्चे हैं। जब इस भावना को हम साकार रूप देंगे तभी हम एक आध्यात्मिक परिवार बन पायेंगे।

ई.एल. मालेकर ने बंधुत्व दिवस की सार्थकता बताते हुए कहा कि आज के दिन हमें अपने अहम् का पूर्णतया त्याग करके मानवता को अपनाना चाहिए। हमें अपने छोटे बच्चों की परवरिश इस तरह करनी चाहिए कि आगे भविष्य में वे एक अच्छे इंसान बनें। जब हम आध्यात्मिकता की बात करते हैं तो उसमें हमें सहनशीलता, शांति और स्वीकार्यता को भी शामिल करना चाहिए। हमें अपने पड़ोसियों को भी वैसे ही प्यार देना चाहिए जैसे हम अपनों को देते हैं।

ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि आज का दिन हमें अपने संस्कारों को पूर्णतया बदलने के लिए बाध्य करता है। जो हमें एक अच्छा इंसान बनाने में मददगार है। आज बाहरी सफाई पर मनुष्यों का ध्यान है परंतु जब तक हम अपने अंदर की सफाई नहीं करेंगे तब तक पूर्णतया शुद्धता और शांति पूरे विश्व में नहीं आ सकती।

ब्र.कु. आशा ने सबका स्वागत किया और आज के विश्व की मनोस्थिति को सबके सामने रखते हुए आज के विशेष दिन की महिमा की। जिसमें ब्रह्माबाबा के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि आज मनुष्य जहाँ जाति धर्म रंग भाषा की बात करता है, ऐसे समय में भी प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने हम सबको एक ही शिक्षा दी और सबके बारे में कहा कि सभी बहुत पवित्र हैं और सबके अंदर उन्होंने सहनशीलता का गुण धारण करने की प्रेरणा दी। जब हम अपने जीवन में इसको धारण करेंगे तब जाकर हम सभी को एक समान देख पाने में सक्षम होंगे।

इस कार्यक्रम में हज़ारों लोगों ने राजयोग मेडिटेशन करके शांति की तरंगें फैलायीं तथा विश्व शांति की कामना की।

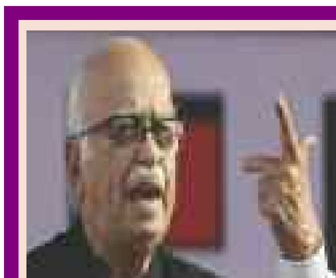

मानव बंधुत्व दिवस के अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता **लालकृष्ण आडवाणी** ने कहा कि मैंने मुख्य रूप से महिलाओं के नेतृत्व वाले इस संगठन के जैसा अन्य कोई संगठन नहीं देखा है। यह सचमुच आश्चर्यजनक है। जो भी मुझसे मिलता है, मैं उसे इस संगठन से सीखने की सलाह देता हूँ।

इस संगठन जैसा और कोई संगठन नहीं

उन्होंने कहा कि विश्व में शांति हेतु बना ये संगठन वास्तव में सही दिशा में अग्रसर है। मुझे जब भी अवसर मिलता है, मैं इससे सीखता हूँ। इस संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्माबाबा ने आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा इन्हों को योग्य बनाया और संगठन बनाकर विश्व में चारो ओर शांति का संदेश देने का उत्तरदायित्व सौंपा। मुझे बहुत खुशी है कि ये संगठन अपने मकसद में ज़रूर कामयाब होगा।

'चलेगा' का कोई स्थान नहीं...

शरीर में घुसी हुई बंदूक की गोली तुरंत ही दूर करने का ऑपरेशन ना किया जाए तो अनेक जटिल समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए कुछेक कार्य ऐसे होते हैं, जिसमें 'बाद में' का स्थान ही नहीं रहता। प्रत्येक कर्म तुच्छ होता है, ऐसा मानने के बजाय 'महान कार्य' है, ऐसा मानकर कार्य करेंगे तो आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

\- ब्र. कु. गंगाधर

बचपन में पढ़ाई के वक्त एक कविता आती थी, 'कदम उठाते मानव, पहले कर विचार, कहाँ से आये हम, कहाँ वापिस जायेंगे हम।'

इन पंक्तियों में बहुत ज्ञान का मर्म समाया हुआ है। इसकी पहली दो पंक्तियाँ आज भी प्रासंगिक है कि 'कदम उठाते मानव पहले कर विचार', ये अपने आपको ध्यान खिंचवाती है कि पहला कदम उठाते वक्त पहले विचार कर, क्योंकि एक सही कदम आपको आबाद कर सकता है और एक गलत कदम समग्र जीवन को बर्बाद भी कर सकता है।

ज़िन्दगी यूँ ही जीने की वस्तु नहीं है। हम यदि जीवन को परमात्मा की सौगात या दुर्लभ, अनमोल अवसर मानते हैं, तो जीवन की चाल और चलन दोनों के बीच सु-संवादिता रहे।

बहुत बार आयोजन सुन, सिर्फ कल्पनाओं को रचकर मानव विचार किए बिना कोई भी कार्य, व्यवसाय की प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए कदम उठाता है। तो उसे 'आज' का विचार कर, 'आने वाला कल' की संभावनाओं को लक्ष्य में रखकर कदम उठाना चाहिए। एक कहावत है कि 'कल के मोर के बजाय आज के कबूतर बहुत अच्छे', इसका अर्थ यह नहीं कि जीवन में साहसिकता का कोई स्थान ही न हो। साहस में भी दूर दृष्टि, समय की परख और उस दिशा में चलने की समझ की आवश्यकता तो अवश्य होनी ही चाहिए, नहीं तो आपका साहस हँसी का पात्र बनेगा।

शेक्सपीयर की एक बात - कि हर एक को 'किसलिए' और 'किस कारण के लिए', यह याद रखने जैसी है। कार्य का निर्णय करने के लिए यह बात अत्यंत आवश्यक है।

मानव एक कार्य को सम्पूर्ण न्याय देने के बजाय उसे पूर्ण करने से पूर्व उसके बारे में बड़ी बड़ी बातें करते हैं। शरीर में घुसी हुई बंदूक की गोली तुरंत ही दूर करने का ऑपरेशन ना किया जाए तो अनेक जटिल समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए कुछेक कार्य ऐसे होते हैं, जिसमें 'बाद में' का स्थान ही नहीं रहता। प्रत्येक कर्म तुच्छ होता है, ऐसा मानने के बजाय 'महान कार्य' है, ऐसा मानकर कार्य करेंगे तो आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

महात्मा गांधी ने एक आधारपूर्ण कार्य के लिए सलाह दी है कि, 'जब काम बहुत हो, समय कम हो तब काम के आयोजन और उसको अमली जामा पहनाने के वक्त कौन सी बात याद रखनी चाहिए? ऐसे प्रसंग में मानव को धैर्य धारण कर जो कार्य ज़्यादा महत्व रखता हो या आवश्यकता अनुसार उसको प्रायिकता देकर पहले पूर्ण करना चाहिए और बाकी के कामों को ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए। दूसरे कार्य के लिए अगर आप जीवित होंगे तो दूसरे भी कार्य पूर्ण कर सकेंगे।'

मनुष्य को काम 'निपटाना' तो आता है, लेकिन 'कर पाने' में वह कमज़ोर साबित होता है। काम में 'चलेगा' के बहाने का कोई स्थान नहीं। आप 'चलेगा' की वृत्ति के वश होंगे तो समय पर समय भी आपकी मदद नहीं करेगा।

एक बार की एक घटना है कि एक व्यक्ति को स्वप्न में आता था कि गांव के तालाब के किनारे पर बहुत बड़ा खज़ाना छिपा हुआ है। उसको बारंबार ये स्वप्न आता रहा। आखिर में वो तीसरे चौथे दिन वहाँ पहुँचा, तो वहाँ पर एक सिपाही पहरा दे रहा था। उसे देखकर वो ठहर गया। - शेष पेज 8 पर

सदा सतगुरू की श्रीमत पर चलना, अर्थात् मनमत से फ्री

शक्ति और साइलेंस में क्या फर्क है? शक्ति अच्छी एनर्जी पैदा कर देती है। समय सफल करना, कुछ भी हो जाये समय की वैल्यु बहुत है। ब्रह्माकुमारियाँ क्या कर रही हैं, अभी यह सारी दुनिया जानती है। भारत तो क्या, सारे विश्व में बहुत अच्छी सेवायें हो रही हैं। सभी मीठे प्यारे बाबा के बच्चे हैं, कोई भी कडुवा बोलने वाला है ही नहीं। कड़वा माना हूँ, ऊं... बाबा कहता धीरज धर मनुआ...। आप सब कौन हो - मीठे मीठे बाबा के बच्चे। ऐसे नहीं कहते मम्मा के बच्चे, बच्चे बाबा के हो। अन्दर में है अभी वैकुण्ठ आने वाला है, संगम की यह थोड़ी सी घड़ियां हैं, बहुत समय नहीं है। हम कहते मीठा बाबा, बाबा कहता जी बच्चा। यही याद राजयोग है।

अकेले आये हैं, अकेले जाना है, कहाँ जाना है? अपने घर में बाबा के पास जाना है। फिर सतयुग में आना है। नेचुरल अन्दर याद में यह शक्ति समाई हुई है। जाना कहाँ है, वहाँ ऊपर में बैठ नहीं जाना है। बाबा कहते हैं बैठके क्या करेंगे? वहाँ कोई कार्य तो है नहीं। बाबा की रचना इतनी सुन्दर है, दिल से निकलता है वाह! बाबा वाह!, बाबा कहते, बस यूँ ही सदैव खुश रहो, आबाद रहो, न बिसरो न याद करो। हम भारतवासी हैं, मैं इंडियन कभी नहीं कहती हूँ। भगवान आया है भारत में। जो भी विदेश में बाबा के बच्चे पैदा हुए हैं वन्डरफुल हैं, यह बाबा के टच किये हुए हैं, यज्ञ क्या है, वो इनसे पूछो। भगवान ने यज्ञ रचा है, यज्ञ में जो भी आते जाते उन्हें देखने से, उनको मिलने से बाबा आपेही याद आता है, मेरे को याद करना नहीं पड़ता है। दिल से वाह बाबा वाह निकलता है।

शान्ति से, प्रेम से, खुशी से जीवन सफल करना हो तो मिसाल बाबा बनाता है। यह आत्मा जब तक शरीर में है तो क्या करे! अच्छा है ना। एक बाबा दूसरा न कोई, माना बाबा है तो सुख शान्ति प्रेम नैचुरल लाइफ में है परन्तु थोड़ा कभी अगर मान शान की इच्छा होगी तो वो अभिमान वो फीलिंग ले आता है। अहंकार तो मरा। क्या चाहिए किसको? मैं कौन हूँ, तो खुश हूँ। मैं माना देह से न्यारी हूँ। मेरा कौन तो प्रभु की प्यारी हूँ।

मेरे सब सम्बन्ध एक बाबा से हैं। सखा, शिक्षक, सतगुरू भी वही मेरा बाबा है। अभी सतगुरू की श्रीमत पर हैं, तो मनमत परमत से फ्री होने से जो भगवान कराये सो करो। बाबा के इशारों को कैच कर सकते हैं, कैचिंग पॉवर, टचिंग पॉवर। टचिंग आती है तो उसे कैच कर लेते हैं, बाबा के वायब्रेशन। मैं कहती हूँ बाबा, तो बाबा कहता है बच्चा। वारिस हैं ना। वर्से में बाबा कहता है न्यारी रहो और सबकी प्यारी रहो।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

जितना न्यारे हैं ड्रामा की यह नॉलेज जो बाबा ने दी है, वन्डरफुल है। ऑटोमेटिक बाबा की याद आती है। याद करना नहीं पड़ता है। इतना मीठा इतना प्यारा शिव भोला भगवान है। कितना अच्छा है। भले बाबा अव्यक्त हुआ परन्तु आज दिन तक भी सेवा कितनी कर रहा है, करा रहा है। हम कौन हैं? बाबा के बच्चे हैं और बाबा ने जो ऊपर से लेकर के नीचे तक साथ दिया है। अभी क्या करने का है, क्वेश्चन नहीं है, जम्प लगाके ऊपर जाना है। ऐसा जम्प लगाने में होशियार कौन है? इसमें होशियार बनने से बाबा तेरा बनने में बहुत सुख मिलता है। यह जो आवाज़ है, बाबा का बनने से सुख मिला है वो सुख सबको मिले, यह भावना है। शान्त मन हो, तन शीतल हो।

कभी कोई ऐसा किसी के मुख से शब्द न निकले कि आज अच्छा नहीं बोला, यह कभी भी किसके अन्दर से आवाज़ न निकले। तो जीना है तो कैसे, गैरंटी है और मरना है तो भी कैसे, कैसे मरेंगे? यह प्लान है ना बाबा के पास।

बिन्दु बन, बिन्दु को याद कर, बीती बातों को बिन्दी लगाओ

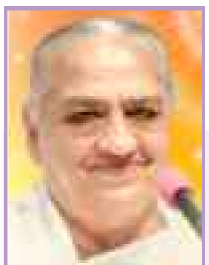

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

मौन में रहना सबके लिए ज़रूरी है क्योंकि मौन से दिमाग की शक्ति बढ़ती है। जो ज़्यादा बोलते हैं उनका दिमाग कमज़ोर होता, क्योंकि शरीर की शक्ति व्यर्थ नष्ट हो रही है। इसलिए बाबा हम बच्चों को सिखाते हैं कि जो काम दो शब्दों में हो सकता है उसके लिए दस शब्द नहीं बोलो क्योंकि जितना बोलेंगे, जैसा बोलेंगे, वैसी ही आदत पड़ती जाएगी। जो ज़्यादा बोलता है वह अपनी बात को ज़्यादा सिद्ध करता है। तो सिद्ध करने के लिए बहुत प्वाइन्ट्स की आवश्यकता है जैसे कि वकील को केस जीतने के लिए कितना बोलना पड़ता है। अगर हम इन बातों में लगे रहेंगे तो जो बाबा कहता है वह हम नहीं कर सकेंगे। जो बाबा कहते हैं कि शुभ चिन्तन करो, मनन करो वह शक्ति नहीं बढ़ेगी क्योंकि उन व्यर्थ बातों में लगे रहने से फुर्सत नहीं मिलेगी और यह व्यर्थ बातें ऐसी होती हैं जो एक बात जाती है तो दस बातें पहले खड़ी होती हैं। एक विघ्न हटेगा तो दूसरा पहले ही तैयार होगा। इसीलिए बाबा कहते हैं कि मनोबल को बढ़ाओ।

मनोबल शब्द बहुत अच्छा है। इसमें मन को एक ही संकल्प में एकाग्र करने का अभ्यास करना होता है। मन में बल तभी आ सकता है जब आपका मन एकाग्र हो। अगर आपके पास एकाग्रता की शक्ति होगी तो इस पुरुषार्थी जीवन में यदि कोई विघ्न भी आया तो आप एक सेकण्ड में उसको बिन्दी लगाकर व्यर्थ चिन्तन से बच सकते हैं। बाबा कहते हैं कि कोई भी बात हो, आप आत्मा बिन्दु बन, बिन्दु बाप को याद करते हुए हर बीती बात को बिन्दी लगाओ। इन तीन बिन्दियों का तिलक अमृतवेले ही लगा लो तो फिर कोई विघ्न नहीं आयेगा और अगर आता भी है तो उसमें आप विजयी होंगे। बाबा की याद से शक्तियाँ आती हैं जिनसे आप जो चाहो वह कर सकते हो।

तो मनोबल माना मन की एकाग्रता। अगर बीती हुई बातों के ऊपर सोचेंगे तो एक तो टाइम वेस्ट, दूसरा एनर्जी वेस्ट होगी। तो बीती हुई बातों को याद करके परेशान होना भी समझदारी का काम नहीं है, क्योंकि इससे हमारी स्थिति में जो उन्नति होनी चाहिए उसमें बाधा पहुँचती है। इसलिए बीती हुई बातों को एकदम फुलस्टॉप लगा दो। नहीं तो मन में बहुत परेशानी होगी। मेडिटेशन भी वही कर सकते हैं जो मन को कंट्रोल करना जानते हैं। नहीं तो मन सदा ही किसी ना किसी बातों में झूमता रहेगा या मूँझा हुआ रहेगा। मनोबल को बढ़ाने के लिए एक तो एकाग्रता चाहिए दूसरा कंट्रोलिंग पॉवर। मन की एकाग्रता माना मैं जो चाहूँ, जिस समय चाहूँ कर लूँ। मन की एकाग्रता के लिए आवश्यक है मन की स्वच्छता। बाबा के पास जाकर उन्हें अपने दिल की बात सुनाकर अपने मन को एकदम खाली करो तो आपकी दिल हल्की हो जायेगी। बाकी जो बीती हुई बातें हैं उसको फिर सोचो नहीं क्योंकि इससे हमारा जो सबसे बड़ा खज़ाना संकल्पों का है वह गंवाते जाएंगे। एक सेकण्ड भी संकल्प शक्ति को आपने गंवाया तो वह एक सेकण्ड नहीं है, लेकिन आपने अनेक जन्मों के लिए गंवाया।

यह सृष्टि एक नाटक है। इस नाटक का पहला पाठ है-बीती सो बीती। इसलिए कोई भी व्यर्थ विचार चल नहीं सकते। नाटक कभी रुकता नहीं, चलता ही रहता है। तो यह याद रखने से जो अतीत के व्यर्थ संकल्प चलते हैं कि यह ऐसा क्यों हुआ, यह क्यों नहीं हुआ, यह नहीं किया, वो सारे खत्म हो जाते हैं। इसलिए नाटक के उस रहस्य को जानकर काम में लाना है। ऐसा ना हो कि नाटक भी कहें और व्यर्थ थॉट्स भी चलते रहें।

परमात्मा से शक्तियाँ लेनी हैं और समय पर उनका सदुपयोग भी करना है। जो शक्ति जिस समय चाहिए उसी समय इस्तेमाल होनी चाहिए। यदि इसी समय पर शक्ति को उपयोग में लायेंगे तो उससे समस्याएँ समाप्त हो जायेंगी, समाधान स्वरूप बन जायेंगे।

सृष्टि के नाटक में यह समय जो चल रहा है वह अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह परिवर्तन का समय है। पाँच हज़ार वर्ष के सृष्टि नाटक में यह परिवर्तन का समय बहुत थोड़ा है, और इस थोड़े से समय में ही हम अपना भविष्य उज्जवल बना सकते हैं। यही वह समय है जिसमें इस नाटक का अंत भी होता है और नये नाटक की शुरुआत भी। कहते हैं- अब नहीं तो कब नहीं। इस थोड़े समय के पुरुषार्थ से ही हमें पाँच हज़ार वर्ष के भाग्य की रेखाएँ बनानी हैं। श्रेष्ठ भाग्य की रेखाएँ खींचने की कलम है हमारे श्रेष्ठ कर्म। हमारे कर्म, अर्थात् भाग्य रेखाएँ अंकित करने की कलम हमारे हाथ में है। जितनी लम्बी लकीर खींचना चाहें खींच सकते हैं। मैं जो हूँ, जैसा हूँ ठीक हूँ, ठीक चल रहा हूँ और दूसरों से बहुत अच्छे हैं, होशियार हैं, ये तो ऐसा सोचकर स्वयं को संतुष्ट करना है। यह समझो कि तकदीर की लकीर छोटी खींचना, तो ऐसी लकीर ना खींचें, भले कोई कैसा भी हो, उसके लिए शुभ भावना और शुभ कामना रखना चाहिए।

नई दुनिया के विधान के साकार प्रणेता

आदरणीय भ्राता रमेश जी अथक सेवाधारी और बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे 1953 में अपनी माता के साथ मुम्बई में संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सम्पर्क में आये और 1961 में वे ब्रह्माकुमारीज़ के साथ नियमित रूप से जुड़ गये। उनका जन्म 5 फरवरी, 1934 में हुआ था। इनके पिता का नाम नानालाल शाह तथा माता का नाम शांता देवी था। ईश्वरीय ज्ञान के पारखी रमेश भाई जी ने नवीनता तथा शोध के माध्यम से ईश्वरीय सेवाओं को आगे बढ़ाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

वे संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के साथ मिलकर अमेरिका, जापान, लंदन, रूस, जर्मनी समेत अनेक देशों में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का प्रतिनिधित्व करते हुए ईश्वरीय ज्ञान का प्रचार-प्रसार करते रहे। पवित्र धन कमाने, उसके उपयोग पर अपनी लेखनी से क्रमवार लेखों से लोगों को प्रेरित करते रहे। इसके साथ ही उन्होंने जबसे ये जाना कि स्वयं परमात्मा अवतरित होकर विश्व परिवर्तन का कार्य कर रहे हैं, ये निश्चय हो जाने के बाद कभी भी उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा और परमात्मा के विश्व परिवर्तन के कार्य में परमात्मा की श्रीमत अनुसार सर्वस्व समर्पित कर कार्य करते रहे।

आदर्श पारिवारिक जीवन की मिसाल रमेश भाई जी ने हमेशा राजा जनक के मिसल ट्रस्टी होकर ईश्वरीय सेवाओं को सम्भाला। चार्टर्ड अकाउंटेंट की परीक्षा में वे गोल्ड मेडलिस्ट थे। लौकिक एवं अलौकिक कायदों एवं कानून के वे प्रबल समर्थक थे। हमेशा ईश्वरीय संस्थान को दुनिया के सामने उज्जवल पानी की तरह ले जाना इनकी आदतों में शुमार था। आज उस महान आत्मा, विधि विधान के साकार प्रणेता प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की नींव तथा

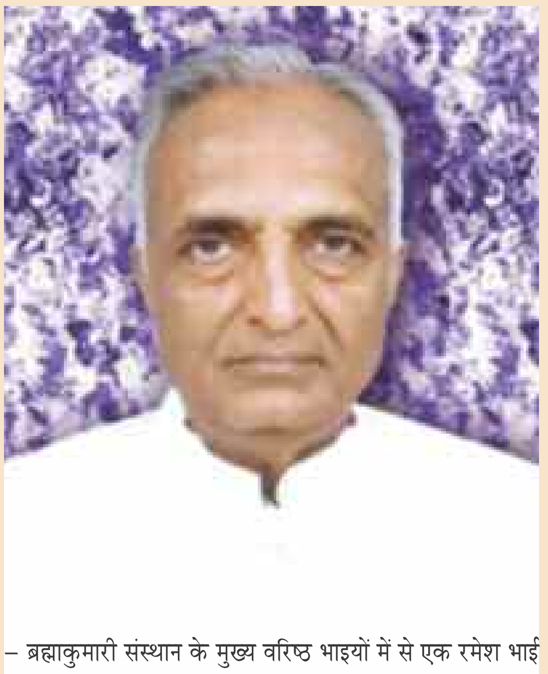

– ब्रह्माकुमारी संस्थान के मुख्य वरिष्ठ भाइयों में से एक रमेश भाई दूरांदेशी बुद्धि थे। तन, मन, धन सबकुछ उन्होंने ईश्वरीय सेवा में लगा दिया। अपनी युगल उषा बहन के साथ हर स्थानों पर सेवाओं पर उपस्थित रहकर मार्गदर्शन करते रहे। इनके इन महान कार्यों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र द्वारा **'इंटरनेशनल अंडरस्टैंडिंग एवं फाइनेन्शियल मैनेजमेंट अवॉर्ड'** से सम्मानित किया गया। वे केवल कानूनों के ही जानकार नहीं बल्कि डांस, ड्रामा के लेखक और मार्गदर्शक भी रहे।

संस्था की विभिन्न गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका तो निभाई ही, साथ ही अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय के साथ भारत सहित देश-विदेश के सेवाकेन्द्रों पर आर्थिक पारदर्शिता के सूत्रधार बने। चाहे वह छोटा हो या बड़ा, हर किसी को कायदेनुसार चलने के लिए प्रेरित करना तथा उन्हें आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत रहे। मुम्बई में ब्रह्माबाबा के निर्देशन में सन् 1964 में पहली बार आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जो मुम्बई में सेवाओं के विस्तार के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। इसके साथ ही आबू के साथ-साथ मुम्बई में रहकर वर्ल्ड रिन्युवल सीरिच्युअल ट्रस्ट की ज़िम्मेवारियों का निर्वहन करते हुए महाराष्ट्र ज़ोन की सेवाओं के विस्तार का मार्गदर्शन करते रहे। साथ ही कई और महत्वपूर्ण पदों पर भी सफल निर्देशन करते रहे हैं जो निम्नलिखित है:-

1. सचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एज्युकेशनल सोसायटी
2. सचिव, राजयोगा एज्युकेशन एंड रिसर्च फाउण्डेशन
3. अध्यक्ष, न्यायविद प्रभाग
4. अध्यक्ष, स्पार्क प्रभाग
5. निदेशक, कला एवं संस्कृति प्रभाग
6. प्रणेता, इंडिया वन सोलर थर्मल पावर प्लांट
7. ट्रस्टी, श्री शिव आध्यात्मिक फाउंडेशन

विश्व सेवा के अर्पित आत्मा ने किया पंचतत्वों को भी अर्पण

ब्रह्माकुमारीज़ के अनन्य प्रतिनिधि फर्श से अर्श निवासी की ओर...

पूरे विश्व को एक सूत्र में बांधने वाले सूत्रधार, ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव, वर्ल्ड रिन्युवल सीरिच्युअल ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी एवं गॉडलीवुड स्टूडियो के अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. रमेश शाह ने 28 जनवरी, 2017 को प्रातः 7:23 मिनट पर अपना पुराना देह त्याग कर बापदादा की गोद ली। वे 83 वर्ष के थे। वे लम्बे समय से बीमार चल रहे थे। ऐसे प्रमुख, परमात्मा के अति समीप, हम सबके अनन्य, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, अथक सेवाधारी, संस्था को एक नये मुकाम पर ले जाने वाले, उसको श्रेष्ठता के पायदान चढ़ाने वाले भ्राता रमेश शाह जी को पूरे ईश्वरीय परिवार की तरफ से हृदय से भावपूर्ण श्रद्धासुमन अर्पित।

भ्राता रमेश शाह जी एक नज़र में...

हैदराबाद। राजनीतिज्ञों के लिए 'री-इस्टैबलिशिंग गोलडेन एरा' विषयक सेमिनार में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. बृजमोहन,चेयरमैन,राजनैतिक सेवा प्रभाग। साथ हैं मधुसूदन चारी,स्पीकर, तेलंगाना लेजिस्लेटिव एसेम्बली, स्वामी गौड़,चेयरमैन,तेलंगाना लेजिस्लेटिव काउंसिल, बहन कविता,सांसद, ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. कुलदीप तथा ब्र.कु. उमा।

बेळागवी-कर्नाटक। राष्ट्रीय युवा दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा रामनाथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए चंद्रशेखर शिवाचार्य महास्वामीजी,हिरेमठ हुक्केरी, रेवनसिद्धेश्वर स्वामीजी,गौरीशंकर मठ,कब्बुर, सौरभ हेगड़े,यूथ फॉर सेवा ऑर्गनाइज़ेशन, ब्र.कु. अम्बिका, ब्र.कु. विजयलक्ष्मी, ब्र.कु. प्रतिभा तथा ब्र.कु. नागरत्ना।

छोटा उदेपुर-गुज.। 'वार्षिक महोत्सव' में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. राज दीदी, विधायक धीरूभाई भिला, सरपंच सोमभाई भील, ठाकुर जयदीप सिंह, हाई स्कूल प्रमुख सोमाभाई कोली, खेतीबाड़ी मंडली प्रमुख हिम्मत भाई, ब्र.कु. मोनिका तथा ब्र.कु. सुभा।

रीवा-म.प्र.। व्यापार संवर्धन प्रकोष्ठ के चेयरमैन व दैनिक जागरण समूह रीवा तथा भोपाल के प्रधान सम्पादक मदन मोहन गुप्ता को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निर्मला। साथ हैं विन्ध्य विकास प्रकोष्ठ के चेयरमैन देवेन्द्र सिंह।

मुम्बई-मलाड। गणतंत्र दिवस पर लिबर्टी गार्डन में आयोजित कार्यक्रम में सभी को इस शुभ दिन की बधाई देते हुए ब्र.कु. कुंती।

रीवा-म.प्र.। भार्गव उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मनगवाँ में स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अर्चना। साथ हैं स्कूल के डायरेक्टर शशिकांत मिश्रा तथा अन्य।

कचिगुदा-हैदराबाद। 'सबका मालिक एक' विषयक कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. बृजमोहन,ओ.आर.सी.,गुरूग्राम, ब्र.कु. उषा,माउण्ट आबू तथा अन्य धर्म प्रमुख।

सिर्फ अपने अंदर की आवाज़ सुनें

गतांक से आगे...

प्रश्न:- कहीं-कहीं पर यह प्यार आसक्ति भी बन जाता है।

उत्तर:- यदि मैं आपके दर्द को महसूस कर रही हूँ, पैरेंट बच्चे के साथ हैं, बच्चे से कोई गलती हो गई तो पैरेंट दु:खी हो जाते हैं, कहीं उसकी पैरेंटिंग स्किल पर जैसे प्रश्न चिन्ह उठ गया। फिर हम इतने उलझ जाते हैं कि बस हम चाहते हैं कि बच्चा किसी भी तरह से ठीक हो जाये। वो जो मेरे ऊपर 'दाग' लगा है दुनिया के सामने नहीं, मेरे लिए अपने लिए कि मेरी पैरेंटिंग के ऊपर जो 'दाग' लगा है वो ठीक हो जाना चाहिए। इसलिए हम उसको कहते भी हैं कि बस तुम ठीक हो जाओ। हम उसको समझने के लिए समय देने के लिए भी तैयार नहीं होते हैं कि वो ऐसा क्यों कर रहा है? इसके पीछे क्या उलझन है? इसके पीछे क्या दर्द है? क्या आत्म-गौरव के कारण दु:ख हुआ? कुछ नहीं। तुम ठीक हो जाओ बस। तुम ठीक हो जाओ क्यों? क्योंकि जब तुम ठीक हो जाओगे, तब मैं ठीक हो जाऊंगा। तो मैं अपने रोल को अच्छी तरह से प्ले नहीं कर रहा हूँ और जैसे ही हम ये करना शुरू करते हैं, तो हम अपना ध्यान रखना शुरू करेंगे, मन में बहुत ज़्यादा ऊपर-नीचे नहीं होगा। तब हमारा मन स्वत: ही शांत होता जायेगा। सारे जवाब, सारे समाधान, यहां पर (मन में) हैं। जिसको हम कहते इंटिच्यूशन, एक शिक्षक है जो अंदर बैठा हुआ है, लेकिन अंदर की आवाज़ सुनने के लिए हमें बाहर की आवाज़ को बंद करना पड़ेगा। अभी क्या हो रहा है इतनी आवाज़ है, वो अंदर से आवाज़ देता भी है, लेकिन हम सुन नहीं पाते हैं।

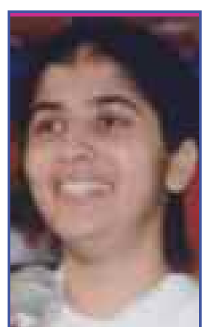

ब्र. कु. शिवानी

प्रश्न:- हम इतना कन्फ्यूज़ हो जाते हैं कि हम उस आवाज़ को पहचान ही नहीं पाते हैं।

उत्तर:- जैसे-जैसे हम इस यात्रा पर आगे बढ़ते जाते हैं तो अंदर से आवाज़ आती है कि ये ठीक नहीं है, ये सही है, लेकिन हम क्या करते हैं उस आवाज़ को सुना-अनसुना कर देते हैं। क्यों अनसुना किया, कहीं मैंने सुना है कि अगर मैं उस आवाज़ की बात मानती हूँ तो मैं वो करने से अपने-आपको रोक दूंगी, जिसपर मेरी खुशी निर्भर है।

एक उदाहरण देकर हम प्रयोग करते हैं कि अगर हम नशा करके तीन-चार घण्टे टेलीविजन देखते हैं तो अंदर से एक छोटी सी आवाज़ आती है कि मत देखो, ये मत लो, तुम्हारे लिए यह ठीक नहीं है, लेकिन हम इस आवाज़ को सुनते नहीं है और इससे दूर चले जाते हैं। मैं उस आवाज़ को इसलिए अनसुना कर देती हूँ कि कहीं वो आवाज़ मेरी खुशी को ही मुझसे दूर न लेके चली जाये। जब हम यह महसूस करते हैं कि वो आवाज़ ही मुझे मेरी खुशी तक लेकर जाने वाली है तो बाद में मुझे पश्चाताप होता है।

प्रश्न:- मुझे पता चल रहा है कि मैं टी.वी. देखकर अपना समय नष्ट कर रही हूँ।

उत्तर:- क्योंकि मैंने अपने अंदर की आवाज़ न सुनकर दूसरे की आवाज़ सुनी। इससे क्या होता है कि जब उसको बार-बार दबा दिया जाता तो वो अंदर की आवाज़ अंदर ही दब जाती है। फिर वो बाहर नहीं आती है। वो एक इमोशनल बीते हुए समय के रूप में आयेगी। हमें अन्तर्मन के रूप में एक बहुत अच्छा शिक्षक मिला है जो हमेशा हमें अच्छा सिखाता है। लेकिन हम उस शिक्षक की आवाज़ को, उसकी बुद्धि की ही अवहेलना करना शुरू कर देते हैं। मेरे जीवन में मेरे लिए क्या सही है, उसका मेरे पास उत्तर है, इसके लिए हमें किसी दूसरे के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। हमें सिर्फ अपने अंदर की आवाज़ को सुनने का प्रयास करना चाहिए कि वो क्या कहता है। - क्रमश:

स्वास्थ्य

गुड़ खाने से 16 फायदे

1. खाना खाने के बाद अक्सर मीठा खाने का मन करता है। इसके लिए सबसे बेहतर है कि आप गुड़ खाएं। गुड़ का सेवन करने से आप हेल्दी रह सकते हैं।

2. गुड़ पाचन क्रिया को सही रखता है।

3. गुड़ शरीर का रक्त साफ करता है और मेटाबॉलिज़्म ठीक करता है। रोज़ एक गिलास पानी या दूध के साथ गुड़ का सेवन पेट को ठंडक देता है। इससे गैस की दिक्कत नहीं होती। जिन लोगों को गैस की परेशानी है, वो रोज़ लंच या डिनर के बाद थोड़ा गुड़ ज़रूर खाएँ।

4. गुड़ आयरन का मुख्य स्रोत है। इसलिए यह एनीमिया के मरीजों के लिए बहुत फायदेमंद है। खासतौर पर महिलाओं के लिए इसका सेवन बहुत अधिक ज़रूरी है।

5. त्वचा के लिए- गुड़ ब्लड से खराब टॉक्सिन दूर करता है, जिससे त्वचा दमकती है और मुहाँसे की समस्या नहीं होती है।

6. गुड़ की तासीर गर्म है, इसलिए इसका सेवन जुकाम और कफ से आराम दिलाता है। ज़ुकाम के दौरान अगर आप कच्चा गुड़ नहीं खाना चाहते हैं तो चाय या लड्डू में भी इसका इस्तेमाल कर सकते हैं।

7. एनर्जी के लिए - बहुत ज़्यादा थकान और कमज़ोरी महसूस करने पर गुड़ का सेवन करने से आपका एनर्जी लेवल बढ़ जाता है।

8. गुड़ शरीर के टेंपरेचर को नियंत्रित रखता है। इसमें एंटी एलर्जिक तत्व हैं, इसलिए दमा के मरीजों के लिए इसका सेवन काफी फायदेमंद होता है।

9. जोड़ों के दर्द में आराम- रोज़ गुड़ के एक टुकड़े के साथ अदरक का सेवन करें, इससे जोड़ों के दर्द की दिक्कत नहीं होगी।

10. गुड़ के साथ पके चावल खाने से बैठा हुआ गला व आवाज़ खुल जाती है।

11. गुड़ और काले तिल के लड्डू खाने से सर्दी में अस्थमा की परेशानी नहीं होती है।

12. ज़ुकाम जम गया हो, तो गुड़ पिघलाकर उसकी पपड़ी बनाकर खिलाएं।

13. गुड़ और घी मिलाकर खाने से कान का दर्द ठीक हो जाता है।

14. पाँच ग्राम सौंठ दस ग्राम गुड़ के साथ लेने से पीलिया रोग में लाभ होता है।

15. गुड़ का हलवा खाने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।

16. पाँच ग्राम गुड़ को इतने ही सरसों के तेल में मिलाकर खाने से श्वास रोग से छुटकारा मिलता है।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

परेशानी या खुशी का गायब होना, या मन का उदास होना, अपने जीवन से मज़ा नहीं आना- ये व्यर्थ संकल्प की निशानियाँ हैं। अर्थात् मन या तो व्यर्थ सोच रहा है, या फिर भविष्य की उलझनों में उलझा हुआ है, जो कि अनिश्चित है। अब इन बातों के लिए आप किसी ज्योतिषी के पास जाओ, या फिर किसी मनोवैज्ञानिक के पास जाओ, और उससे आप

कहो कि मैंने तो ऐसा कुछ किया ही नहीं, फिर भी उदास हूँ, निराश हूँ, आज जीवन में मज़ा नहीं आ रहा है, वो क्या उत्तर देगा....!

इसके लिए फिर से पहले वाले लेसन पर ही चलते हैं, जिसमें हमने बात की कि जितने कम विचार, उतने शक्तिशाली! उदाहरण के रूप में आप समझ सकते हैं कि यदि आपके कम्प्यूटर में ज़्यादा फाइलें होंगी, तो वह स्लो हो जायेगा, वैसे ही आपके मन में यदि ज़्यादा फोल्डर और फाइल्स हैं थॉट के, तो वो स्लो हो जायेगा। इसलिए कम्प्यूटर को फास्ट करने के लिए उसके अंदर स्पेस चाहिए, तब जाकर मन फास्ट चलेगा, अर्थात् अच्छी तरह चलेगा।

आज हमारे मन में निरंतर इतनी बातें चलती हैं जिसका हमारे जीवन से कोई भी सरोकार नहीं है। अरे, आपको पता नहीं है, ये खज़ाने हैं विचारों के। इनको व्यर्थ गंवाने वालों का क्या होता होगा, आप सोच भी नहीं सकते हैं। जिनको आज नींद की समस्या, डिप्रेशन है, टेंशन है, उसका कारण ही है अधिक सोचना। यहाँ अधिक से अर्थ व्यर्थ या फालतू बातें, जिनके होने ना होने से हमें कोई फर्क नहीं पड़ता। उसका यदि एक लाइन में कारण बताएं तो कह सकते हैं कि, सबका 'मोह'। लोगों से, चीज़ों से, दुनिया से, दुनियादारी से, बुद्धि से, अपनेपन से, अपने शरीर के सम्बन्धियों से। जिसके कारण शक्तियाँ हमारी क्षीण होती ही जा रही हैं। हम कुछ भी सोचते हैं, वो मोह वश ही तो सोचते हैं, नहीं तो कुछ सोचते ही नहीं, बस खुश...। हमें इस बात पर ही काम करना है, और व्यर्थ से बचना है। समझा।

मन एक अचूक अस्त्र है, जिससे किसी भी परिस्थिति को काट-छांट सकते हैं, उसे अलग कर सकते हैं। इसे यदि ऐसे समझा जाये कि मन में आने वाला हर एक विचार दूसरे विचारों का बीज है, यदि पहला है तभी तो दूसरा है। इसीलिए कहा गया कि पहले मन को जीतो, अर्थात् विचारों के बीज या शुरुआत को समझो।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-14-2017

1			2	■	3		4		■
	■	■	5			■		■	6
■	7	8		■		■		■	
■	■	9		10	■	■	■	11	
12	■		■	13	14		■	15	
16	17		■	18		■	19		
20		■	21	■	■	22	■	■	■
■	■	23		■	24		■	■	25
26	27		■	28	■	29			
■	30		■	31		■		■	

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. जानकी, जनक सुता (2)
2. लाचार, कमज़ोर, हीन (4)
3. निराशा, निष्फलता (3)
4. ....और रुहानी डॉ. का सुनो ये कहना है (3)
6. साधारण से अधिक, विशेष (5)
8. मज़बूत, शक्तिशाली (4)
10. कोमल, सुकुमार, महीन (3)
11. सहारा, संबंध (3)
12. प्रतिलिपि, अनुकृति, कॉपी (3)
14. कखसार, कपोल (2)
17. पिता, आदरणीय व्यक्ति, पूज्य (2)
21. सारा, सम्पूर्ण (2)
22. तीव्र, तेज़, तीखा (3)
23. इज़्ज़त, तुम्हें सबके साथ बड़े....से पेश आना है (3)
25. पास, नज़दीक (3)
27. दरवाज़ा, द्वार (2)
28. सतयुग और त्रेता युग है ब्रह्मा का....(2)

बायें से दायें

1. राम और सीता का युगल रूप (4)
3. साथी, अपने....को जाकर ज्ञान सुनाओ (4)
5. प्रजा, लोग (3)
7. अब तुम्हारे अंदर से विकारों की....निकाल देनी है (3)
9. ....तेरी गली में जीना तेरी (3)
11. अर्ध, अधूरा (2)
13. गाय की तरह....कर ज्ञान को हज़म करना है (3)
15. हथियार आदि का पैना किनारा (2)
16. पंक्ति, लाइन (3)
18. आने वाले....की तुम तकदीर हो (2)
19. हर लेना, मिटाना, लूटना, चुराना (3)
20. आदत, बुरी टेक (2)
23. ....घर जाना है (2)
24. अवस्था, हालत (2)
26. सहायता, सहयोग (3)
29. माया की....से अपनी सम्भाल करनी है, ग्रहण (4)
30. खुदा, अल्लाह, भगवान (2)
31. ....से नारायण, नारी से लक्ष्मी (2)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन

भरतपुर-राज.। पिताश्री प्रजापिता ब्रह्माबाबा की 48वीं पुण्यतिथि पर सम्बोधित करते हुए अति. जिला कलेक्टर ओ.पी. जैन। साथ हैं डॉ. ओ.पी. शर्मा,रिटायर्ड प्रिंसीपल,आर.डी. गर्ल्स कॉलेज, बीरपाल सिंह,राष्ट्रीय अध्यक्ष,अपना घर संस्था, ब्र.कु. अमर सिंह, ब्र.कु. कविता तथा ब्र.कु. बबिता।

ग्वालियर-म.प्र.। आई.टी.एम. यूनिवर्सिटी के कुलसचिव ओम वीर सिंह को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. चेतना।

बड़ौत-उ.प्र.। अर्जुन अवॉर्ड से सम्मानित सोकिन्दर पहलवान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मोहिनी।

राम चंद्रपुर-ओडिशा। राधा कृष्ण मंदिर के उद्घाटन अवसर पर ईश्वरीय ज्ञान तथा शिव परमात्मा की सत्य पहचान प्राप्त कर ब्रह्माकुमार बनने का अनुभव सभी संतों तथा लोगों के साथ साझा करते हुए संत ब्र.कु. शांति राम जी। साथ है ब्र.कु. प्रवाती, ब्र.कु. सुज्ञानी, तथा ब्र.कु. सत्यप्रिय।

सुनाम-पंजाव। प्रजापिता ब्रह्माबाबा की पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. मीरा। साथ हैं भागीरथ राय गहिरा,प्रेसीडेंट, नगर काउंसिल, मोनिका गोयल,वाइस प्रेसीडेंट, बहन शविना,आप पार्टी तथा दमन थिंद वाजवा,कांग्रेस।

फरीदावाद-संजय एन्क्लेव। 'ऊँची सोच युवा की खोज' विषयक युवा कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. शोभा, ब्र.कु. प्रतिभा तथा युवा जन।

वोईसर-महा.। प्रजापिता ब्रह्माबाबा की पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में श्री श्री 1008 परम पूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी डॉ. उमाकांत आनंद सरस्वती जी महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हीरल तथा ब्र.कु. मीता।

खामगांव-महा.। म्युनिसिपल कमेटी के नवनिर्वाचित प्रेसीडेंट, वाइस प्रेसीडेंट तथा अन्य सदस्यों के सम्मान में आयोजित 'सत्कार समारोह' में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्रह्माकुमारी बहन तथा कमेटी के सदस्यगण।

कडप्पा-आ.प्र.। प्रजापिता ब्रह्माबाबा की पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्रीमति सुब्बालक्ष्मी,तेलुगु देसम पार्टी महिला प्रेसीडेंट, शशि कुमार,टी.डी.पी., भास्कर जी,विवेकानंद एसोसिएशन प्रेसीडेंट, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

खासोली-चुरू। राजकीय माध्यमिक विद्यालय में नैतिक विकास से सम्बन्धित कार्यक्रम के पश्चात् प्रधानाचार्य हरिप्रसाद शर्मा को नैतिक विकास से सम्बन्धित पोस्टर भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमन।

मुम्बई-मलाड। रोड सेफ्टी वीक के दौरान विधायक असलम शेख द्वारा आयोजित 'मलाड मस्ती प्रोग्राम' में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित वैल्यू गेम्स स्टॉल पर खेल का आनंद लेते शहर वासी।

भरतपुर-राज.। प्रजापिता ब्रह्माबाबा की पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए ब्र.कु. हीरा, ब्र.कु. संध्या, जतन सिंह,विकास अधिकारी,पं.स. नगर, काशीराम भगत,समाज सेवी तथा अन्य।

रिश्तों को दें अहमियत

- ब्र.कु. विश्वनाथ

आलकल घर-परिवार में पति-पत्नी के बीच नोंक-झोंक होना एक आम बात हो गई है। विवाह का बंधन आपसी प्रेम का, सहयोग का होता है, लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि दंपतियों के बीच किसी विषय पर विवाद न हो; क्योंकि दोनों के विचार, भाव व इच्छाएँ अलग-अलग होते हैं। दोनों को ही उन्हें पूरा करने की स्वतंत्रता है। यदि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के विचार, भावनाओं व इच्छाओं का सम्मान नहीं करता, उन पर अपना अधिकार जमाना चाहता है, तो दूसरा व्यक्ति इसे थोड़े समय के लिए तो सह सकता है, लेकिन लंबे समय तक नहीं; क्योंकि यह सब करना उसके लिए एक घुटन भरी ज़िन्दगी को जीने के समान होगा।

भारत में सदा से परंपरा रही है कि नारियों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था, परंतु मध्य युग के समय इन सामाजिक मूल्यों का धीरे-धीरे हनन होता गया और नारियाँ घर की चारदीवारी में सिमटकर रह गईं। बहुत लंबे समय तक स्त्रियों ने यह घुटन बर्दाश्त की, लेकिन आजकल की शिक्षित नारी इसे सहन नहीं कर सकती, वह पुरुषों के कंधे से कंधे मिलाकर चलना चाहती है और चलती भी है और यही कारण है कि देश की स्त्रियाँ आज एक स्वतंत्र सोच रखने वाली हो गई हैं।

समझदार होने का आकलन इस बात से किया जा सकता है कौन कितना सहनशील है, धैर्यवान है व उत्तेजक परिस्थितियों में भी कितना शांत रह सकता है। हम सभी के जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ विनिर्मित हो जाती हैं, जिनमें हमें दूसरों के ऊपर क्रोध आने लगता है। गुस्से पर नियंत्रण न होने पर व्यक्ति दूसरे को भला-बुरा कहने लगते हैं और समझदारी के अभाव में साधारण सी बातें बड़े विवाद का रूप ले लेती हैं। जब व्यक्ति की मन:स्थिति शांत होती है और कारणों को ढूंढ़ा जाता है तो उनमें ऐसी कोई गंभीर बात नहीं होती है, जिसके कारण लड़ाई-झगड़ा हो और एक-दूसरे को क्षमा न किया जा सके। लेकिन फिर भी अहंकारवश लोग एक-दूसरे को माफ नहीं करते और घर-परिवारों में लड़ाइयाँ होती रहती हैं।

रिश्तों में यदि थोड़ी-बहुत नोंक-झोंक है तो कोई ज़्यादा गम्भीर बात नहीं, लेकिन यदि घर-परिवार में नित्य लड़ाई-झगड़े होने लगते हैं तो यह एक गंभीर बात है, जिसका प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है और इसके परिणाम भी हितकर नहीं होते। प्रख्यात मनोविज्ञानी जेनिस काईकोल्ट का कहना है कि जिन पति-पत्नी के बीच रोज़ाना औसतन तीस मिनट का समय बीतता है, उनकी प्रतिरोधक क्षमता समान्य लोगों से एक-तिहाई कम होती है। उन्होंने यह भी पाया कि ऐसे पति-पत्नी की अनुवांशिक संरचना में भी परिवर्तन आने की आशंका रहती है। इसी कारण जेनिस ने ऐसे दंपतियों को खासतौर पर चेतावनी दी है, जो एक-दूसरे से तीखी भाषा में बात करते हैं। उन्होंने यह साफ कहा है कि जीवन के लिए एक खराब विवाह व्यक्ति की खराब सेहत से भी अधिक खतरनाक है।

जिस तरह यदि कम्प्युटर में वायरस आ जाता है तो उसे फॉरमेट करना पड़ता है, इसके बाद नई प्रोग्रामिंग करके उसे फिर से उपयोग में लाया जाता है, उसी तरह यदि नए रिश्तों में विवाद उठे, तो इसका मतलब यह नहीं कि उन रिश्तों को खत्म कर दिया जाए। इसका मतलब यह है कि हमें रिश्तों को निभाना नहीं आता। कमियाँ कहीं हमारे अंदर ही हैं, जिन्हें ढूंढ़ने, तलाशने व सुधारने की ज़रूरत है।

डॉ. जेनिस की इस बात से ओहायो स्टेट यूनिवर्सिटी के डॉ. मर्लाकी भी सहमत हैं। डॉ. मर्लाकी ने अपने अध्ययन से यह साबित किया है कि तनाव में रहने वाले दंपतियों में एपिनेफ्रिन, नोरएपिनेफ्रिन व एसीटीएच हॉर्मोन का अधिक स्राव होता है, जो व्यक्ति के प्रतिरोधक तंत्र को नुकसान पहुँचाते हैं।

जब भी व्यक्ति गुस्से से भर उठता है, मन में क्रोध व तनाव को लिए रहता है तो इसका प्रभाव उसके शरीर की आंतरिक ग्रंथियों पर पड़ता है और उसके तनाव को नियंत्रित करने वाले हॉर्मोन सक्रिय हो जाते हैं, लेकिन लगातार तनाव के बने रहने पर व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रभावित होती है। ऐसे लोग मानसिक समस्याओं, जैसे- स्मृति कमज़ोर होना, अपने द्वारा कही गई बातों को भूल जाना, एकाग्र न हो पाना, अशांत व उद्विग्न रहना जैसी समस्याओं से घिरे रहते हैं।

मनोवैज्ञानिक यह कहते हैं कि पति-पत्नी के बीच संबंधों में परेशानी तब होती है, जब दोनों आपस में होने वाले विवादों को सुलझाते नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे के प्रति तरह-तरह की आशंकाओं-कुशंकाओं को लेकर बैठे रहते हैं और इनके साये में घुटनभरी ज़िन्दगी जीते रहते हैं। इसी कारण डॉ. जेनिस का कहना है कि रिश्तों में असहमतियाँ हो सकती हैं, लेकिन ये असहमतियाँ विचार और सोच के स्तर पर होनी चाहिए, न कि अहंकार के स्तर पर।

यदि पति-पत्नी के बीच होने वाले विवाद उनके मनों में स्थायी तौर पर जड़ें जमा लें तो रिश्तों का पुनर्गठन करना चाहिए, जिसका तात्पर्य यह कदापि नहीं कि रिश्ते खत्म कर दिया जाए और फिर से किसी दूसरे के साथ नए रिश्ते जोड़े जाएं। इसका तात्पर्य यह है कि इन रिश्तों की नई शुरुआत की जाए।

जिस तरह यदि कम्प्युटर में वायरस आ जाता है तो उसे फॉरमेट करना पड़ता है, इसके बाद नई प्रोग्रामिंग करके उसे फिर से उपयोग में लाया जाता है, उसी तरह यदि नए रिश्तों में विवाद उठे, तो इसका मतलब यह नहीं कि उन रिश्तों को खत्म कर दिया जाए। इसका मतलब यह है कि हमें रिश्तों को निभाना नहीं आता। कमियाँ कहीं हमारे अंदर ही हैं, जिन्हें ढूंढ़ने, तलाशने व सुधारने की ज़रूरत है। कभी-कभी अपनी गलतियों को स्वीकारना, समझना बहुत बड़ी-बड़ी पैदा होने वाली समस्याओं से हमें बचाता है।

अच्छा यही होगा कि हम अपने नज़रिये को बदलें, सहनशील बनने का अभ्यास करें। विवादपूर्ण परिस्थितियों में यथासंभव शांत व मौन करें, अपने मनमुटाव को दूर करें, और फिर से तरोताज़ा होकर अपने रिश्तों को निभाएँ। किसी ने ये सच ही कहा है कि रिश्ते और रस्सी एक जैसे होते हैं। दोनों में यदि गाँठ पड़ जाए तो खुलने में वक्त लगता है। इसीलिए यह आवश्यक है कि इन रिश्तों में कटुता को स्थान न देते हुए आपसी सौहार्द, प्रेम एवं आत्मीयता को प्रश्रय दिया जाए, ताकि संबंध प्रेमपूर्ण एवं स्थायी बने रहें।

जयपुर-राजापार्क। 'अलविदा तनाव शिविर' के दौरान मंचासीन हैं शंभुदयाल बदगुजार,चेयरमैन,खादी ग्रामोद्योग भंडार, महेश शर्मा,हिन्दु स्पीरिच्युअल सर्विस तथा ब्र.कु. पूनम।

अपनी उपलब्धियों के साथ रहें अहसानमंद

- ब्र.कु. गोविंद

संसार में ऐसा कौन व्यक्ति है, जो सुख की चाह न रखता हो? सुख सभी को प्रिय होता है और हर व्यक्ति अपने जीवन को सुखी बनाना चाहता है। यदि हम गंभीरता से स्वयं का निरीक्षण करेंगे तो पाएंगे कि हमारी अधिकतर क्रियाएँ इसी सुख की प्राप्ति के लिए ही होती हैं। अपने जीवन को सुखी बनाने व सुख प्राप्त करने के लिए जाने व अनजाने हम कई क्रियाएँ करते हैं। मनोरंजन व सुविधा हेतु साधन एकत्र करते हैं, स्वादिष्ट व्यंजन खाते हैं, लोगों से मिलते हैं और न जाने कितने ऐसे कार्य करते हैं। किंतु ऐसे कितने लोग हैं, जिन्होंने अपने जीवन को सुखी बना लिया हो?

> कृतज्ञता सृष्टि के आकर्षण के नियम के ज़रिए कार्य करती है, जो हमारे संपूर्ण जीवन को संचालित करता है। हमारे जीवन में यह नियम हमारे विचारों और भावनाओं पर कार्य करता है, हम जैसा महसूस करते हैं, वैसा ही हम अपनी ओर आकर्षित भी करते हैं।

हमारे इन प्रयासों के परिणामस्वरूप हमें सुखानुभूति तो अवश्य होती है, किंतु वह क्षणिक होती है और कुछ समय बाद मन में पुन: सुख पाने की चाह पैदा हो जाती है। हम अपना सारा जीवन इसी अतृप्ति को दूर करने में बिता देते हैं, किंतु फिर भी हम अपने जीवन को सुखी नहीं बना पाते। ऐसा इसलिए होता है; क्योंकि हम जीवन के नियमों को नहीं समझते। उन बातों की उपेक्षा करते हैं जो हमारे वास्तविक सुख का कारण होती हैं। यदि हम जीवन के नियमों को समझें और उन्हें अपनाएँ तो अवश्य ही हम अपने जीवन को सुखी व सार्थक बना सकते हैं।

जीवन का एक महत्वपूर्ण नियम है- कृतज्ञता। कृतज्ञता का अर्थ है, धन्यवाद देना। ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को वह सब कुछ दिया है, जो उसके विकास के लिए आवश्यक है। यदि हम ईमानदारी से अपने विगत जीवन के बारे में सोचें तो पाएंगे कि जीवन के विकास के लिए जो श्रेष्ठतम परिस्थिति हमारे लिए हो सकती थी, वह सब कुछ हमारे पास ही थी, किंतु हमने उसका महत्व ही नहीं समझा। उन अवसरों से लाभ उठाने की अपेक्षा उनकी उपेक्षा की। ईश्वर की इस कृपा के लिए कृतज्ञता अभिव्यक्त करने की अपेक्षा प्राय: हम अपने अभावों व आवश्यकताओं का रोना रोते रहे।

कृतज्ञता सृष्टि के आकर्षण के नियम के ज़रिए कार्य करती है, जो हमारे संपूर्ण जीवन को संचालित करता है। हमारे जीवन में यह नियम हमारे विचारों और भावनाओं पर कार्य करता है, हम जैसा महसूस करते हैं, वैसा ही हम अपनी ओर आकर्षित भी करते हैं। यदि हम सोचते हैं कि 'मेरे पास पर्याप्त धन नहीं है', 'मैं किसी योग्य नहीं हूँ', 'मेरा जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है', तो हम वैसे ही बनने लग जाते हैं। लेकिन यदि हम उन चीज़ों के बारे में सोचते हैं, जिनके लिए हम कृतज्ञ हैं, तो आकर्षण का नियम कहता है कि हमारे जीवन में अच्छी घटनाएँ घटेंगी। यह कुछ उसी तरह काम करता है, जिस तरह धातु चुंबक की ओर खिंचती है। कृतज्ञता चुंबकीय होती है और हमारे पास जितनी अधिक कृतज्ञता होती है, हम चुंबक की तरह उतनी ही अधिक समृद्धि और शांति को आकर्षित करते हैं।

हमारे विकास में सबसे बड़ी बाधा हमारा अहंकार है। अहंकारी व्यक्ति के सामने सब कुछ छोटा होता है। ऐसा व्यक्ति अपने प्रत्येक कार्य का श्रेय तो स्वयं लेता है, साथ ही दूसरों के कार्यों का भी श्रेय लेना चाहता है। कृतज्ञता हमें विनम्र बनाती है; जबकि मात्र अहंकारी व्यक्ति ही कृतघ्न हो सकता है। ऐसे व्यक्ति अपने अहंकार के कारण किसी के साथ मधुर संबंध नहीं बना पाते। यहाँ तक कि उनके सगे संबंधी भी उनसे दु:खी रहते हैं।

इतिहास में बहुत से महान लोग हुए हैं, जिन्होंने जीवन में अकल्पनीय उपलब्धियाँ हासिल कीं, परंतु उनका श्रेय स्वयं न लेते हुए परमात्मा के प्रति कृतज्ञ रहे। यही गुण उन्हें महापुरुषों की श्रेणी में लाकर खड़ा करता है। महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस, मीराबाई, श्रीअरविंद, प्रजापिता ब्रह्माबाबा आदि ऐसे अनेक महापुरुष हैं, जिन्होंने कभी किसी कार्य का श्रेय स्वयं नहीं लिया, बल्कि सब कुछ ईश्वर को ही अर्पण किया और हर परिस्थिति में ईश्वर के प्रति कृतज्ञ रहे।

यह सभी जानते हैं कि हमारी इच्छाएँ एवं महत्वाकांक्षाएँ कभी पूरी नहीं हो पातीं; क्योंकि इनका कोई अंत नहीं है। न इनको पूरा कर पाना संभव है और न ही ये कभी तृप्त हो सकती हैं। ये क्षणिक सुख अवश्य देती हैं, किंतु बदले में दे जाती है- दु:ख और वेदना का अंतहीन सिलसिला। यदि जीवन को सुखी बनाना है तो हमें सबसे पहले परमात्मा के प्रति कृतज्ञ होना सीखना पड़ेगा। जो परमात्मा के दिए इस जीवन के प्रति कृतज्ञ हो जाता है, वह जीवन के हर क्षण का सदुपयोग करना प्रारंभ कर देता है और यहीं से उसके जीवन में सौभाग्य का सूर्य उदय हो जाता है।

अहमदनगर-महा.। पूर्व केन्द्रीय मंत्री तथा राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष शरद पवार को 'विश्व का सबसे छोटा हैंडमेड कैलेंडर' भेंट करते हुए ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके। इस कैलेंडर में राजयोग के साप्ताहिक कोर्स की जानकारी दी गई है। इसकी ऊँचाई 23 से.मी. और चौड़ाई 30.5 से.मी. है। इसको लंडन के 'वंडर बुक ऑफ रेकॉर्ड्स इंटरनेशनल' में शामिल किया गया है।

पलक्कड-केरल। सेवाकेन्द्र की 20वीं वर्षगांठ पर आयोजित 'त्रिदिवसीय ध्यान महोत्सवम' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. उषा,माउण्ट आबू, ब्र.कु. बीना, ब्र.कु. कैलाश, पद्मविभूषण डॉ. जी माधवन नायर,पूर्व चेयरमैन,आई.एस.आर.ओ., पद्मश्री डॉ. पी.आर. कृष्णकुमार,चांसलर,अविनाशी लिंगम यूनिवर्सिटी फॉर वुमेन,कोयम्बटूर,एम.डी.,आर्य वैद्य फार्मेसी, शाफी परम्बी,विधायक, प्रमिला शशिधरण,म्युनिसिपल चेयरपर्सन, स्वामी चंद्रदीपथन ज्ञान तपस्वी,इंचार्ज,शांतागिरी आश्रम, वेणु नायर,इंटरनेशनल फिल्म मेकर तथा अन्य।

धार-म.प्र.। श्रीमद्भगवद् कथा वाचक संत हेमलता शास्त्री को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सत्या। साथ हैं ब्र.कु. रानु।

सातारा-जकातवाड़ी(महा.)। प्रतिष्ठित फीज़ियोथैरेपिस्ट डॉ. मनोज कांबळे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शांता।

राजकोट-रणछोड़ नगर। रोड सेफ्टी वीक के दौरान बेदी स्कूल के बच्चों को 'ट्रैफिक अवेयरनेस' विषय पर समझाते हुए ब्र.कु. शीतल। साथ हैं स्कूल के प्रिन्सीपल तथा टीचर्स।

मुम्बई-बोरीवली। ब्रह्माकुमारीज़ के ट्रान्सपोर्ट एंड ट्रैवल विंग द्वारा आयोजित 'ह्यूमन चेन फॉर रोड सेफ्टी अवेयरनेस अभियान' का उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध टी.वी. कलाकार अनस रशीद, अली खान, अरुण कदम, विश्व प्रसिद्ध विसलर निखिल राणे, समाजसेवी अभिजीत राणे, ए.सी.पी. रामचन्द्र धवाले, ब्र.कु. दिव्यप्रभा तथा अन्य।

वर्धा-महा.। अनाथ आश्रम के बच्चों का जन्मदिन मनाते हुए लॉयट्स स्टील कंपनी के वाइस प्रेसीडेंट राजेश सैनी, डॉ. अनिल परसोडे, दीपा सैनी, ब्र.कु. माधुरी तथा आश्रम के बच्चे।

हुबली-कर्नाटक। साउथ वेस्टर्न पुलिस कर्मियों के लिए 'स्ट्रेस मैनेजमेंट एंड मेडिटेशन' विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में सीनियर चीफ सेक्योरिटी कमिश्नर मल्लिकार्जुन, ब्र.कु. लता, ब्र.कु. उषा, इंस्पेक्टर तलवार तथा अन्य।

मुक्ताईनगर-महा.। खडसे स्कूल में त्रिदिवसीय राजयोग शिविर के पश्चात् समूह चित्र में प्रिन्सीपल उदय श्री, टीचर्स, स्टाफ तथा ब्र.कु. सुषमा।

मुम्बई-जोगेश्वरी ईस्ट। हल्दी कुमकुम पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. मीना। साथ हैं पुष्पा भोरे तथा अन्य।

दृढ़ता के साथ पुरुषार्थ से ही सफलता की प्राप्ति

गतांक से आगे...

परमात्मा कहते हैं कि जब व्यक्ति अपने मोह के जाल से मुक्त होता है, वही परमात्मा के अनादि स्वरूप को समझ पाता है, जान पाता है, तब वह योगयुक्त रहने के पुरुषार्थ में लग जाता है और वो भी दृढ़ता पूर्वक। दृढ़ता बहुत आवश्यक है क्योंकि दृढ़ता के बिना सफलता को प्राप्त नहीं कर पायेंगे। साधारण संकल्पों से अगर पुरुषार्थ करना आरंभ कर दिया तो बार-बार मोह की रस्सियाँ उसको खींचती रहेंगी और वो उस पुरुषार्थ में तीव्र गति से आगे बढ़ नहीं पायेगा। जितना तीव्र गति से समय परिवर्तन हो रहा है, उतना तीव्र गति से हमें भी पुरुषार्थ करने की आवश्यकता है।

भगवान आगे बताते हैं कि - जो ज्ञान का अध्ययन के साथ एक तो योगयुक्त रहता है, दृढ़तापूर्वक पुरुषार्थ करता है, मोह से मुक्त होता है, फिर कहा कि जो ज्ञान का अध्ययन करते हैं, सोमरस पान करते हैं और यज्ञ सेवा करते हैं, वे पापकर्म से शुद्ध होकर पवित्र स्वर्गधाम में जन्म लेते हैं। इस संसार से जैसे ही वे आत्मायें प्रयाण करती हैं तो वे पवित्र स्वर्ग धाम में जन्म लेती हैं। जहाँ वे देव पद का आनंद भोगते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि ''मनुष्य से देवता किए करत लागे न वार'' भगवान को परिवर्तन करने में कोई देर नहीं लगती है। नर से श्री नारायण, नारी सो श्रीलक्ष्मी समान बनाना ये भगवान के लिए कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन कैसे बनाते हैं, ये नहीं कि कोई जादू की छड़ी घुमा दी और व्यक्ति को नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बना दिया। नहीं, इसके लिये पुरूषार्थ बहुत ज़रूरी है। जो जिस गति से और जितनी शक्ति से पुरुषार्थ करते हैं उतना ही वो आगे बढ़ सकते हैं। उसके लिए जैसे कहा ज्ञान का अध्ययन और सोमरस अर्थात् अमृत पान, ज्ञान अमृत है। ये अमृत पान करते हैं। यज्ञ सेवा करते हैं अर्थात् अपने शुद्धिकरण के प्रोसेस में जो नित्य लगकर के दूसरों को भी प्रेरणा देते हैं ये है बड़ी सेवा। किसी के जीवन को सुधारने के लिए, उसको दिशा बताने के लिए आत्म शुद्धिकरण की ओर, उससे बड़ी सेवा और कोई हो नहीं सकती। तो वो सर्व पाप कर्मों से शुद्ध हो जाते हैं, क्योंकि सेवा एक ऐसी अग्नि है जिसमें शुद्धिकरण होता है। शुद्धिकरण से वो पवित्र स्वर्ग धाम में जन्म लेता है। अर्थात् नर से सो नारायण पद को प्राप्त करता है। स्वर्ग धाम में जन्म तो लेता है, लेकिन जैसे-जैसे पुण्य क्षीण होते जाते हैं, तो पुन: सतयुग से उसकी यात्रा आरंभ हो जाती है और कलियुग तक आ जाती है। जिस प्रकार संसार का भी ये नियम है कि कोई भी चीज़ नयी बनाते हैं, तो नयी से पुरानी होना, ये स्वाभाविक है।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

एक मकान नया बनाओ तो पुराना अपने आप हो जाता है। बाज़ार से कपड़ा ले आओ, यूज़ न भी करो, कपड़ा कपाट में रख दो दस साल। फिर दस साल के बाद निकालो, तो क्या कहेंगे कि ये दस साल पुराना है। थोड़ा खींचेंगे तो फटने लगेगा! यूज़ भी नहीं किया फटने कैसे लगा? ये कुदरत का नियम है। कोई भी चीज़ सदा स्थायी एक ही स्थिति में नहीं रह सकती है। इसलिए जैसे ही स्वर्ग धाम को प्राप्त करते हैं, उसके बाद जैसे-जैसे जन्म लेते हैं तो हर जन्म में अपने पुण्य कर्म के आधार से समय व्यतीत करते हैं। तो वो पुण्य क्षीण तो होगा। आज व्यक्ति बैंक बैलेंस जमा करता है। रिटायर होऊंगा तो उसके बाद मैं उस बैंक बैलेंस को यूज़ करूंगा। रिटायर अवस्था में मुझे काम आयेगा। जब रिटायर हुआ, तो उसमें अब जमा नहीं हो रहा है। लेकिन जो है उसको उठा-उठाकर खायेगा तो क्षीण तो होगा कि नहीं होगा।

ठीक इसी प्रकार जैसे ही व्यक्ति पुरुषार्थ करता है, कल्प के अंत में, अपना आत्म-शुद्धिकरण करता है और उस आत्म-शुद्धिकरण से स्वर्ग में पवित्र धाम में जाकर देव पद को प्राप्त करता है। वहाँ जो जन्म है, वो जैसे कि बैंक बैलेंस जमा किया हुआ है, जो वो खाने का कार्य करता है। जैसे-जैसे वह उसे उठा-उठाकर खाते जाता है तो क्या होता है? क्षीण होने लगता है और वो क्षीण होता है, तो वह पुन: मृत्युलोक में आ जाता है। - क्रमश:

हाथरस-उ.प्र.। आनंदपुरी कॉलोनी की खरंजा लगी सड़क का पुनर्निर्माण किया गया तथा ब्रह्माकुमारीज़ मार्ग के नाम से इसका लोकार्पण करते हुए जनपद के जिलाधिकारी अविनाश कृष्ण सिंह। साथ हैं ब्र.कु. शान्ता तथा अन्य गणमान्य अतिथिगण।

भुवनेश्वर-ओडिशा। नये वर्ष के अवसर पर आदित्य पाढ़ी,चीफ सेक्रेट्री,ओडिशा सरकार को गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए ब्र.कु. दुर्गेश नंदिनी।

पाटन-गुज.। कॉलेज की लाइब्रेरी में 'पॉवर ऑफ माइंड' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. गंगाधर, ब्र.कु. अनुज, ब्र.कु. त्रिभुवन तथा कॉलेज के स्टूडेंट्स तथा व स्टाफ।

नवरंगपुर-ओडिशा। नये वर्ष के अवसर पर एस.पी. सुधांशु शेखर मिश्रा,आई.पी.एस. को गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. नमिता तथा ब्र.कु. राखी।

भोपाल-कोलर रोड। आर.सी.पी.वी. नोरोन्हा एकेडमी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन एंड मैनेजमेंट,भोपाल में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' विषय पर एडमिनिस्ट्रेटर्स को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. किरण। सभा में उपस्थित हैं कंचन जैन,डायरेक्टर जेनरल ऑफ एकेडमी तथा अन्य।

पाचोरा-महा.। खडक देवला गांव में पर्यावरण संतुलन के लिए बगीचे में पौधे लगाते हुए ब्र.कु. मीरा तथा अन्य भाई बहनें।

'चलेगा' का कोई स्थान नहीं...

- पेज 2 का शेष

उसने सोचा कि जब ये सिपाही जायेगा तब मैं उस जगह से खज़ाना उठाकर ले आऊंगा। दिन भर वो वहाँ घूमता रहा। सिपाही की नज़र उस पर पड़ी। उसने पूछा कि आप इतनी देर से क्यों घूम रहे हो? तो उसने निखालस भाव से कहा कि 'मेरे स्वप्न में बार-बार ये आता है कि यहाँ कोई खज़ाना छिपा हुआ है। उसे मुझे लेना है। ये बात सुनकर सिपाही हँस पड़ा और बोला कि 'आपके स्वप्न को साकार करने के लिए तो मैंने पैर के जूते घिस डाले, लेकिन कहीं पर भी खज़ाना नहीं मिला। आपका खज़ाना तो जहाँ आप पूजा-अर्चना करते हैं उसके नीचे दबा पड़ा है। वहाँ जाकर आप ढूंढ़ो तो वहाँ से मिलेगा। व्यक्ति वहाँ पहुँचा और वहाँ से खज़ाना प्राप्त कर एक सुंदर मंदिर बनवाया और उसका आभार व्यक्त किया। कहने का भाव यह है सही सफर सुंदर साधनों और सुंदर स्थान को खोजने में नहीं है, बल्कि नई दृष्टि से देखने की ज़रूरत है। अपनी तृष्णा दूर-सुदूर की वस्तुओं में होती है, जबकि जो कुछ हम चाहते हैं, ये अपने पास ही, अपने अंदर ही छिपी हुई होती है।

अपनी मंज़िल तक पहुँचने के लिए पाँच बातें अवश्य याद रखनी चाहिए

1. प्रत्येक कदम और हर कदम का एक अगुवा स्थान होता है। एक गलत कदम आपके समग्र जीवन को बर्बाद कर सकता है। इसलिए प्रत्येक कदम में पूर्व विचार एवं साहस होना चाहिए।

2. ज़िन्दगी जीना मुश्किल नहीं है, मुश्किल तो है अपने सकारात्मक अभिगम बनाये रखने में। पहाड़ भी आपको नमन करेगा, यदि आप दूरदर्शी होंगे।

3. जीवन, ये अविराम यात्रा है। जिसमें ठहर कर बैठे रहने का कोई स्थान नहीं है। अगर अटक गए तो पास की मंज़िल भी दूर लगने लगेगी।

4. मुसाफिर बनो, लेकिन रास्ते के जानकार होकर। ध्येयहीन मुसाफिरी आपको कहीं भी पहुँचा देगी।

5. ज़िन्दगी में मंज़िल की प्राप्ति के लिए कठिन समस्याओं की चिंता ना करो। और कोई मार्गदर्शक का अंधानुकरण और अंधानुसरण न करो।

ख्यालों के आईने में...

गुज़री हुई ज़िन्दगी
को कभी याद न कर,
तकदीर में जो लिखा है
उसकी फरियाद न कर,
जो होगा वो होकर
रहेगा,
तू कल की फिक्र में
अपनी आज की हँसी
बर्बाद न कर।

ईश्वर का दिया कभी
अल्प नहीं होता,
जो टूट जाये वो संकल्प
नहीं होता,
हार को लक्ष्य से दूर ही
रखना,
क्योंकि जीत का कोई
विकल्प नहीं होता।

कथा सरिता

मूल्यनिष्ठ दान

एक बार महात्मा बुद्ध अपने शिष्यों के साथ बैठे थे। उनसे भेंट करने वालों की पंक्तियाँ लगी हुईं थी। वे महात्मा बुद्ध को कुछ-न-कुछ भेंट चढ़ाते जा रहे थे। दान देने वालों में अनेक ऐसे थे जो विपुल धन के स्वामी थे। बुद्ध जिनकी भेंट को स्वीकार करते थे, उनके लिए अपना दायाँ हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में उठा लेते थे। उसी पंक्ति में एक वृद्धा भी लगी हुई थी, जो सबसे पीछे अकेले खड़ी थी। जब सबने दान अर्पित कर दिया तो वृद्धा सकुचाते हुए बुद्ध के पास पहुँची और बोली- ''महात्मन्! मैं अत्यंत निर्धन हूँ। आज मुझे एक पेड़ से आम गिरा हुआ मिल गया, मैं उसे आधा खा चुकी थी कि तभी आपके नगर पधारने का समाचार मिला। आपको यह आधा खाया आम देने के अतिरिक्त मेरे पास और कुछ भी नहीं है। कृपया इसे स्वीकार करें।''

उसकी भेंट को स्वीकारने बुद्ध अपने आसन से नीचे उतरे और उस आम को दोनों हाथों से ग्रहण किया। उनके शिष्यों ने पूछा- ''प्रभु! अनेकों बहुमूल्य उपहार तो आपने मात्र हाथ उठाकर स्वीकार किए, लेकिन इस वृद्धा के जूठे आम को स्वीकारने के लिए आप अपने आसन से भी नीचे उतर आए। इसमें ऐसी क्या विशेषता है?'' बुद्ध मुस्कराकर बोले - ''शिष्यों! इस वृद्धा ने आज अपनी समस्त पूंजी मुझे दे दी। अन्य लोगों ने मुझे जो भी दिया, वह उनकी संपत्ति का एक छोटा-सा अंश था और उसके बदले में दान देने का अहंकार भी उनके मन में था। इस वृद्धा ने मेरे प्रति अपार प्रेम और श्रद्धा रखते हुए इसके पास जो कुछ भी था, वह मुझे अर्पित कर दिया, फिर भी इसके मुख पर कितनी विनम्रता और शालीनता है।'' यह घटना हमें यह बतलाती है कि दान वही मूल्यवान होता है, जिसको देने के पीछे का भाव श्रेष्ठ होता है।

संसर्ग का असर

कौए ने विद्वान हंस से प्रश्न किया - ''शास्त्रों में सत्संग की इतनी महिमा क्यों कही गई है?'' हंस ने उत्तर दिया - ''संग जिसके साथ होता है, उसके जैसे गुण संग करने वाले को प्राप्त होते हैं। गरम लोहे पर पड़ने से जल का निशान नहीं पड़ता, परंतु वही जल कमल के पत्ते पर पड़ने से मोती-सा चमकता है और वही जल स्वाति नक्षत्र में सीप के मुँह में पड़ जाने से मोती बन जाता है। ठीक ऐसे ही संसर्ग जैसा हो, प्राणी वैसे ही उत्तम, मध्यम अथवा अधम गुण प्राप्त करता है।

ब्योरा भक्ति का

भगवान ने नारद जी को आदेश दिया कि वे पृथ्वीलोक पर जाकर भक्तों के सत्कार्यों की जानकारी लाएँ, ताकि श्रेष्ठ भक्त का चयन किया जा सके। नारद जी अनेक व्यक्तियों से मिले, जो घंटों भगवान की उपासना में लगे रहते थे। उन्होंने सबका ब्योरा अपने खाते में लिखा। एक दिन उन्होंने एक व्यक्ति को वृक्ष सींचते देखा, उसे सींचने के बाद वह फावड़े से ज़मीन खोदने लगा।

नारद जी ने उससे पूछा- ''भैया! तुम कभी भगवान की पूजा करते हो?'' वह व्यक्ति बोला- ''महाराज! मैं जप-पूजा नहीं जानता, मात्र यह जानता हूँ कि समस्त जीव भगवान की संतान हैं। इसलिए उनकी सेवा में लगा रहता हूँ। नित नए पेड़ लगाता हूँ, ताकि बड़े होने पर वे पशु-पक्षियों की क्षुधा को तृप्त कर सकें। पुराने लगे वृक्षों को सींचता हूँ, ताकि वे आते-जाते राहगीरों को छाया व फल दे सकें।'' नारद जी ने उसका ब्योरा भी लिखा और भगवान को प्रस्तुत किया। भगवान ने उसी का चयन अपने सर्वश्रेष्ठ भक्त के रूप में किया।

रहस्मयी दण्ड

छत्रपति शिवाजी के गुरू, समर्थ गुरू रामदास जी को एक किसान ने गन्ने के एक छोटे टुकड़े को पाने के लिए अपशब्द बोल दिये। मामला शिवाजी के सामने लाया गया। किसान ने सोचा कि अब उसे मृत्युदंड ही मिलेगा; क्योंकि घटना-क्रम राजा के गुरू से जुड़ा है। दरबार में समर्थ गुरू रामदास शिवाजी से बोले- ''शिवा! इसका दंड मैं निर्धारित करना चाहूंगा''। छत्रपति शिवाजी ने गुरू-आज्ञा सहर्ष स्वीकार की। समर्थ गुरू रामदास बोले - ''शिवा! इस किसान को पाँच बीघा ज़मीन दान में दे दो।'' शिवाजी समेत दरबार में मौजूद सभी लोग आश्चर्य में पड़ गए कि यह कैसा दंड समर्थ गुरू रामदास जी ने दिया है! सबके कुतूहल को भाँपते हुए समर्थ गुरू रामदास बोले - ''यह किसान निर्धन है। इसने क्षुधा-पीड़ित होकर मुझसे दुर्व्यवहार किया। इसकी पीड़ा-निवारण हमारा कर्त्तव्य है।'' गुरू रामदास के इस व्यवहार ने उस किसान को सदा के लिए बदल दिया।

आत्मज्ञान का मर्म

एक तपस्वी ब्राह्मण था, लेकिन तपस्या के अहंकार ने उसे भ्रमित कर दिया था और उसे आत्मज्ञान का मार्ग नहीं सूझ रहा था। वह बेचैन रहने लगा कि उसके उद्धार का रास्ता कौन बताएगा? एक दिन उसे स्वप्न में संदेश मिला कि वह तुलाधार वैश्य के पास जाए। वे ही उसे कल्याण का मार्ग बताएंगे। वह ब्राह्मण, तुलाधार के यहाँ जा पहुँचा। तुलाधार उसे देखते ही खड़े हो गए और बोले- ''ब्राह्मण देव! आपने अपने चरणों से मेरे निवास स्थान को पवित्र कर दिया है। मैं पहले आए हुए अन्य व्यक्तियों की, व्यापारियों एवं दुकानदारों की बातें सुनकर उनकी सहायता कर लूँ, फिर आपकी सेवा के लिए तत्पर होऊंगा।''

तपस्वी ब्राह्मण, तुलाधार के समीप बैठ गया। उसने देखा कि तुलाधार, दुकानदारों को व्यापार में ईमानदारी बरतने, गरीबों के साथ करुणापूर्ण व्यवहार करने जैसी शिक्षाएँ दे रहे हैं। वहाँ आए गरीबों व असहारों को दान देते हुए उनके साथ विनम्रता व शालीनता का व्यवहार कर रहे हैं। वह तपस्वी ब्राह्मण, तुलाधार के आचरण को देखकर अध्यात्म का सच्चा मर्म समझ गया कि अहंकार शून्य होकर सदाचरण करना ही सच्चा अध्यात्म है। बिना कुछ कहे ही तुलाधार ने उस ब्राह्मण को अध्यात्म की शिक्षा दे दी और वह अपना व्यवहार उसी के अनुरूप बनाकर पुन: साधना में निमग्न हो गया, जिससे उसे शीघ्र आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई।

वैभव सदुपयोग हेतु

एक बार राजकुमारी विशाखा अपनी सेविका सुप्रिया के साथ श्रावस्ती के विहार में महात्मा बुद्ध के दर्शन के लिए पहुँची। उसने अत्यंत मूल्यवान हीरे-जवाहरात से जड़ित एक स्वर्णाभूषण गले में धारण किया हुआ था। बुद्ध के सम्मुख पहुँचने से पूर्व उसने अपने गले से आभूषण निकाला और सेविका को देते हुए बोली ''इसे कहीं रख दो। बुद्ध के दर्शन के बाद पुन: धारण करूंगी। उनके समक्ष वैभव का प्रदर्शन उचित नहीं होगा।'' सुप्रिया ने आभूषण पास की झाड़ी में रख दिया। उपदेश सुनते-सुनते दोनों तन्मय हो उठीं। उन्हें ध्यान ही न रहा कि आभूषण झाड़ी से उठाना है और वे उसे बिना लिए ही राजमहल लौट गईं।

सायंकाल भ्रमण के दौरान बुद्ध के शिष्य आनंद ने वह हार झाड़ी में पड़ा देखा तो उन्होंने एक भिक्षु को राजमहल भेजा। उसने विशाखा से कहा कि वे विहार से अपना हार मंगा लें। यह सुनकर विशाखा ने उनसे कहा - ''वह आभूषण भगवान बुद्ध का सानिध्य पाकर पावन हो उठा है। अब उसका उपयोग इस नश्वर शरीर के लिए नहीं किया जा सकता। उसे बेचकर मिलने वाले धन का सदुपयोग जनहित के कार्यों में किया जाए।'' आनंद, विशाखा के दृष्टिकोण में आए परिवर्तन को देखकर गद्गद् हो उठे।

पटना-बिहार। गुरू गोविंद सिंह जी की 350वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री माननीय नितिश कुमार को माउण्ट आबू के कार्यक्रम में आने का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. बिन्नी। साथ हैं स्वामी चिदानंद सरस्वती,फाउण्डर,ग्लोबल इंटरफेथ वाश अलाइन्स तथा डॉ. लोकेश मुनी जी।

चित्तौड़गढ़-राज.। प्रजापिता ब्रह्माबाबा की पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित करने के पश्चात् चित्र में सांसद सी.पी. जोशी, सी.आई. शिवलाल मीणा, ब्र.कु. आशा तथा अन्य।

जलगांव-महा.। पत्रकार दिवस के अवसर पर जिला पत्रकार भवन में जलगांव जिला पत्रकार संघ का वर्ष 2016 का 'उत्कृष्ट पत्रकार पुरस्कार' न्यू मीडिया टेक्नोलॉजी, नशामुक्ति, पर्यावरण रक्षा, बेटी बचाओ तथा अन्य सामाजिक विषय पर प्रभावी लेखन हेतु डॉ. सोमनाथ वडनेरे को देकर सम्मानित करते हुए नागपुर के ज्येष्ठ पत्रकार चंद्रकांत वानखेडे, विधायक सुरेश भोळे, जलगांव जिला पत्रकार संघ के अध्यक्ष दिलीप तिवारी, ज्येष्ठ पत्रकार अनिल दादा पाटील, पूर्व अध्यक्ष उदय वाघ, विजय बापू पाटील तथा लोकमत के व्यवस्थापक प्रविण चोपड़ा।

दिल्ली-आर.के.पुरम। सी.पी.डब्ल्यू.डी. में ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् चित्र में कृष्ण भाई,सीनियर आई.पी.एस. ऑफिसर, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. मनीषा, ब्र.कु. ज्योति तथा आर.के. सिंघल,रिटायर्ड स्पेशल डी.जी,सेंट्रल पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट।

रुड़की-उत्तराखण्ड। प्रजापिता ब्रह्माबाबा की पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. विमला। साथ हैं धर्म संस्कृति एवं तीर्थाटन विभाग के कार्यकारी अध्यक्ष गिरधारी शास्त्री, डॉ. मधुराका सक्सेना तथा ब्र.कु. मीना।

गया-ए.पी. कॉलोनी। प्रजापिता ब्रह्माबाबा की पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं सेल टैक्स ऑफिसर संजय कुमार,पंसारी, समाजसेवी उषा दालमिया, एल.आई.सी. डेवलपमेंट ऑफिसर उत्तम कुमार, डॉ. आर.कुमार तथा ब्र.कु. सुनीता।

!!! उनका भी शुक्रिया!!!

आप सभी के ज़हन में एक बात तो ज़रूर होगी किसी को लेकर, कि यदि मुझे वो ये काम करने देते, तो मैं आज कुछ और होता। लेकिन किसी बात, या बाधा के कारण मैं यह नहीं कर पाया! मेरी ज़िन्दगी की रुकावट, सफलता के बाधक आदि आदि हम सभी के अंदर की टीस है। जिसने थोड़ी अनुभूति की है, वो हमारे लिए अच्छी है! देखते हैं कैसे...

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

एक कहानी भी है, एक राजा के बेटे को मंत्री के बेटे ने तलवार बाज़ी सिखाने की कोशिश की, उसी कोशिश में मंत्री के बेटे से राजा के बेटे की अंगुली कट गई। इसपर नाराज़ हो रहे राजा के बेटे को मंत्री के पुत्र ने यह कहते हुए तसल्ली दी कि जो होता है वो अच्छे के लिए ही होता है। इसपर राजा के सुपुत्र को गुस्सा आया और मन ही मन उसने मंत्री के बेटे से बदला लेने की ठानी। इस भाव से उसने मंत्री के बेटे को कुएँ से पानी ले आने को कहा। जैसे ही वह पानी निकालने के लिए झुका, तभी उसने उसे धक्का दिया और कुएँ में गिरा दिया। उसने फिर वही बात दोहराई कि, जो होता है वो अच्छे के लिए होता है। तभी कुछ घुड़सवार आते हैं और राजा के बेटे को पकड़ के ले जाते हैं, वहाँ जहाँ उसे किसी कार्य हेतु देवी को बलि चढ़ानी थी। तभी पुजारी ने बोला कि एक बार सुनिश्चित करो कि बच्चे का कोई अंग-भंग तो नहीं है।

सुनिश्चित करने के बाद पुजारी ने कहा, बच्चा अधूरा है, क्योंकि उसका एक अंग भंग है, उसकी एक अंगुली कटी हुई है। देवी उसकी बलि स्वीकार नहीं करेगी, इसलिए उसे तुरंत छोड़ दिया गया। वो भागा-भागा कुएँ के पास आया और मंत्री के बेटे को बाहर निकाला और बोला, कि चलो, उन्होंने मुझे बलि नहीं चढ़ाया, ये अंगुली कटना कल्याणकारी था, लेकिन जो मैंने कुएँ में तुम्हें धक्का दिया, वो क्या था! तब मंत्री के बेटे ने कहा कि वे हम दोनों को ले जाते, तुम्हारी नहीं तो मेरी बलि चढ़ा देते।

ऊपर की कहानी इसलिए कही कि यदि हमारे साथ भी शुरु से लेकर आज तक जो भी घटा, वो पूरी तरह से हम सबके लिए कल्याणकारी ही था और रहेगा। क्योंकि जो भी किसी भी वजह से हुआ, वो हमारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि वो न होता, तो आज जो हैं आप, आप वो नहीं होते।

इस दुनिया में जितने भी लोग असफल हुए, वो फिर कुछ नया कर गए, कुछ अलग कर गए। वैसे ही जिनको भी घर से दु:ख, तकलीफ या प्रताड़ना मिली, वो भी कल्याणकारी, तभी तो आप भगवान की तरफ झुके।

कुछ बच्चे कहते, उनके पिता ने पढ़ाई के लिए खूब ज़ोर दिया और कुछ देखने सुनने नहीं दिया, बाहर घूमने नहीं दिया और उस बात को सोच के आज भी वे दु:खी हैं। आप देखो, इसमें कितना आपका भला है, कि आज आपने एक बार पढ़ाई पढ़ ली, तो पूरी ज़िन्दगी पड़ी है घूमने के लिए, मज़े लेने के लिए, आराम से करो। पढ़ाई के समय पढ़ाई ही ज़रूरी थी। हर एक बात में कल्याण है, यह देखने के लिए हमारी बुद्धि की समझ को और अधिक शक्तिशाली बनाना होता है। हमारे साथ कुछ भी गलत नहीं हो रहा, जो हो रहा, वो कल्याणकारी ही है। हाँ, कोई भी बात थोड़ी देर में समझ आती है, कोई जल्दी भी समझ आ जाती है। जिसने अपने साथ हुई घटना, दुर्घटना में यदि कल्याण देखना शुरु कर दिया, समझो उसका भाग्य चमक गया। क्योंकि कल्याण देखना, माना व्यर्थ बातों से पूरी तरह बचना। आपको उन्हें शुक्रिया करना है, कि आपकी वजह से मैं ऐसा बना, नहीं तो शायद चोट न लगती, मन न दु:खता, या ऐसा न होता तो मैं कुछ भी नहीं कर पाता। तो देखिए कल्याण, और खुश हो जाइए।

उपलब्ध पुस्तकें

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न:- प्रत्यक्षता का क्या अर्थ है? बाबा हमेशा प्रत्यक्षता शब्द का उपयोग करते हैं, प्रत्यक्षता कैसे होगी, यह भी बताएं।

उत्तर:- प्रत्यक्षता का अर्थ है - आये हुए शिव बाबा को सभी जान लेंगे और स्वीकार कर लेंगे कि वह मेरा है। परन्तु शिव बाबा की यह प्रत्यक्षता एकदम अंत में होगी। उससे पूर्व प्रत्यक्ष होंगे अष्ट रत्न, विजयी रत्न अर्थात इष्ट देव-देवियां। साथ ही साथ सम्पूर्ण सत्य परमात्म-ज्ञान भी प्रत्यक्ष होगा अर्थात् सभी उसे स्वीकार कर लेंगे। इसे ही बाबा कहते हैं कि विश्व-नाटक के सभी हीरो एक्टर स्टेज पर आ जाएंगे अर्थात् सभी जान लेंगे कि कौन क्या है।

जहां-तहां बाप समान स्थिति में स्थित हुई आत्माओं के साक्षात्कार होंगे। विजयी रत्नों में पहली पच्चीस आत्माएं विशेष रूप से प्रख्यात होंगी। कहीं उनसे दुर्गा के साक्षात्कार होंगे तो कहीं अम्बा, काली, सरस्वती, गायत्री आदि देवियों के। किसी के मस्तक में चमकती हुई ज्योति दिखाई देगी तो किसी के साथ महाज्योति। तब ज्ञान-योग पांच-दस मिनट में ही सिखा दिया जाएगा। इस तरह होगी जयजयकार। आप यदि प्रत्यक्षता में मुख्य पार्ट बजाना चाहते हैं तो स्वमान में स्थित होकर महान योगी बनें।

प्रश्न:- मैं एक माता हूँ। दो बच्चे हैं, बच्चे आपस में बहुत लड़ते हैं। मुझे अमृतवेले पावरफुल योग भी नहीं करने देते। पति का ट्रांसपोर्ट का धन्धा है, अब अच्छा नहीं चल रहा है। मुझे स्थिति श्रेष्ठ बनानी है तथा मैं विधि भी जानना चाहती हूँ जिससे धंधा भी ठीक हो जाए।

उत्तर:- पुरुषार्थ के मार्ग में किसी के आगे कोई विघ्न है तो किसी के आगे कोई। कल्प के अंत में विघ्न तो होंगे ही। परन्तु यदि मनुष्य सहज भाव से चले और स्वयं को स्वमान द्वारा शक्तिशाली बनाये तो विघ्न आएंगे व चले जाएंगे। हमें कुछ बातों को स्वीकार कर ही लेना चाहिए तथा अपनी स्थिति को नहीं बिगाड़ना चाहिए क्योंकि श्रेष्ठ स्थिति से ही परिस्थिति ठीक होगी।

बच्चे सवेरे आपको पावरफुल योग नहीं करने देते, परन्तु सोने भी तो नहीं देते, यह पॉज़ीटिव बात है। बच्चों का लड़ना समस्या नहीं है, इसे खेल समझो। आप परेशान न हों। वे लड़ें, आप स्वमान में रहो कि मैं एक महान आत्मा हूँ और ये दोनों अच्छी आत्माएं हैं, ये देवात्माएं हैं। उन्हें दिन में पांच बार आत्मिक दृष्टि से देखा करो। इससे वे शान्त हो जाएंगे।

प्रश्न:- मुझे मनन करना बिल्कुल नहीं आता। परन्तु बाबा मनन-शक्ति बढ़ाने को कहते हैं। मैं क्या करूं जो इस सब्जेक्ट में भी आगे बढ़ सकूं?

उत्तर:- ज्ञान मनन अति आवश्यक है। क्योंकि मनन से ही ज्ञान बल के रूप में काम करता है। ज्ञान जब तक बल न बने तब तक जीवन निर्विघ्न नहीं बन सकता और न ही स्थिति योग-युक्त बन सकती।

ज्ञान मनन के लिए ज्ञान-दान करो। ज्ञान देना है तो मनन अवश्य करेंगे। मनन शक्ति सबके पास है परन्तु जो व्यर्थ का मनन ज़्यादा करते हैं, वे ज्ञान-मनन नहीं कर पाते। देख लो, यदि कोई आपको बुरे शब्द बोल दे तो आप उसका कितना मनन करते हैं। मनन शक्ति बढ़ाने के लिए अन्तर्मुखी होना आवश्यक है। बाह्यमुखी कभी मनन नहीं कर सकते। दूसरी बात - कुछ ज्ञान की प्वाइंट्स को स्मृति में रखो तो मनन होता रहेगा। एक टॉपिक लेकर उस पर लिखो। उदाहरण -'आत्मा के बारे में हम क्या जानते हैं, परमात्मा के बारे में हम क्या जानते हैं,' आदि...।

प्रश्न:- बीजरूप स्थिति किसे कहते हैं? इसके क्या लाभ हैं? विनाश को समीप देखते हुए, बाप समान बनने के लिए योग का चार्ट कितना घण्टा होना चाहिए तथा बीजरूप स्थिति की कितनी देर प्रैक्टिस करें?

उत्तर:- एक संकल्प में मन-बुद्धि को स्थित करना बीजरूप स्थिति है। योग-दर्शन में इसे ही निर्बीज स्थिति कहा गया है, वास्तव में ये ही निर्संकल्प समाधि भी है। इसे ही बिन्दू रूप भी कहते हैं, पावरफुल योग या ज्वाला स्वरूप योग भी कहते हैं।

उदाहरण...आपने मन में संकल्प किया कि मैं आत्मा शांत-स्वरूप हूँ। मन को इस एक संकल्प में स्थित करके बुद्धि आत्मा के स्वरूप पर स्थिर करना बीज रूप है...। हमने संकल्प किया कि मैं मास्टर ज्ञान-सूर्य हूँ और बुद्धि को ज्ञान सूर्य शिव बाबा पर स्थित किया - ये बीज रूप है। हमने संकल्प किया कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और बुद्धि को इस स्वरूप पर स्थित किया कि सर्वशक्तिवान की किरणें मुझ पर पड़ रही हैं - यह बीज रूप है। आपने परमधाम में महाज्योति पर बुद्धि को स्थिर कर दिया - यह है बीज रूप स्थिति।

यूँ तो सारे दिन में बीज रूप का अभ्यास दो से चार घण्टे तक भी किया जा सकता है, पर जो जितना करे। इस स्थिति से ही विकर्म विनाश होते हैं, संस्कार बदलते हैं व स्थिति शक्तिशाली बनती है, बुद्धि का भी विकास होता है व अनेक सिद्धियों की भी प्राप्ति होती है। सारे दिन में योग का चार्ट, तीव्र पुरुषार्थी आत्माओं का छ: से आठ घण्टे तक होना ही चाहिए, इसमें स्वदर्शन चक्रधारी होना अर्थात पांच स्वरूपों का अभ्यास, बाबा से रूह-रूहान, अशरीरीपन, स्वमान, सूक्ष्मवतन में फरिश्ते स्वरूप का अनुभव व बीजरूप स्थिति को सम्मिलित किया जा सकता है। श्रेष्ठ ज्ञान-चिन्तन को भी जोड़ें तो आठ घण्टा चार्ट होना ही चाहिए। यद्यपि ज्ञान-चिन्तन योग नहीं है, परन्तु मनन मनुष्य को योग में मगन होने में मदद करता ही है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

देखिए 'अपना DTH' में फ्री 24 घंटे 'पीस ऑफ माइंड चैनल' ...उसके साथ 100 अन्य चैनल भी फ्री
अपने डी.टी.एच. डिश के डायरेक्शन का करें परिवनर्तन...
Satellite Position = 75° East, Satellite = ABS-2
LNB Frequency = 10600/10600, Frequency = 12226/12227
Polarization = H, Symbol = 44000
System = MPEG-2(DVB-S) / MPEG-4(DVB-S2)
FEC = 3/4, 22K = On/Auto, Mode = All/FTA
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें... 8104777111/7014140133

खानपान पर ध्यान तो प्रसन्न रहेगा तन-मन

सर्दी के मौसम में स्वस्थ रहने के लिए आपको अपने खान-पान का पूरा ख्याल रखना चाहिए। इस मौसम में कुछ खास फल और सब्जियों का सेवन करके आप बीमारियों से छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं। जानते हैं सर्दियों के खास खान-पान के बारे में...

सर्दी के इस मौसम में ज़्यादातर लोग बुखार, जुकाम या खाँसी से परेशान रहते हैं। बीमार होने के बाद वे अपने खान-पान के बारे में विचार करते हैं। इसके बजाय बीमारी होने से पहले ही खान-पान को सही रखा जाए तो स्वस्थ रहा जा सकता है। शरीर को रोगों से लड़ने के लिए कुछ खास आहार की ज़रूरत होती है। सर्दी के मौसम में ऐसे खान-पान की ज़रूरत होती है जो आपके शरीर को गर्म रखे और इम्यून सिस्टम को मज़बूत करे। शरीर में यदि अंदर से खुद को मौसम के हिसाब से ढ़ालने की क्षमता हो तो ठंड कम लगेगी और कई बीमारियाँ भी नहीं होंगी। सर्दियों में यदि खान-पान पर विशेष ध्यान दिया जाए तो शरीर संतुलित रहता है और सर्दी कम लगती है। जानते हैं सर्दियों में किस तरह के आहार का सेवन करने से शरीर की गर्मी बनी रहती है और सर्दी बुखार कोसों दूर रहते हैं।

बाजरा

बाजरे के खास गुणों के कारण सर्दी में स्वास्थ्य ठीक रहता है। बाजरा से बनी रोटी व टिक्की को सबसे ज़्यादा सर्दी के मौसम में पसंद किया जाता है। बाजरा में शरीर के लिए आवश्यक तत्व जैसे मैग्नीशियम, कैल्शियम, मैग्नीज़, ट्रिप्टोफेन, फाइबर, विटामिन-बी, एंटीऑक्सीडेंट आदि भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। छोटे बच्चों को बाजरा की रोटी ज़रूर खानी चाहिए।

तिल

सर्दियों के मौसम में तिल खाने से शरीर को ऊर्जा मिलती है। तिल के तेल की मालिश करने से ठंड से बचाव होता है। तिल और मिश्री का काढ़ा बनाकर खांसी में पीने से जमा हुआ कफ निकल जाता है। तिल में कई तरह के पोषक तत्व पाए जाते हैं जैसे प्रोटीन, कैल्शियम, बी-कॉम्प्लेक्स और कार्बोहाइड्रेट आदि। खूबसूरती बनाए रखने के लिए तिल का उपयोग किया जाता रहा है।

अमरूद

इसमें काफी मात्रा में विटामिन सी होता है, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। इसमें पोटैशियम और मैग्नीशियम होता है।

हल्दी

हल्दी का सेवन करने से आप किसी भी तरह की एलर्जी से बच सकते हैं। हल्दी में एंटीऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं। सर्दी के मौसम में रोज़ाना हल्दी वाला दूध पीना चाहिए।

सब्जियाँ

अपनी खुराक में हरी सब्जियों का सेवन करें। सब्जियाँ, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती हैं और गर्मी प्रदान करती हैं। सर्दियों के दिनों में मेथी, गाजर, चुकंदर, पालक और बथुआ का सेवन करना चाहिए।

मेथी

मेथी में विटामिन के, आयरन और फोलिक एसिड ज़्यादा होता है। इसे खाने से शरीर में खून बढ़ता है और शरीर गर्म रहता है।

मूंगफली

मूंगफली के भीतर ये तत्व मौजूद होते हैं- प्रोटीन, नमी, फैट्स, मिनरल्स, फाइबर, कार्बोहाइड्रेट, ऊर्जा, कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन, कैरोटीन, थाइमिन और फोलिक एसिड। इसमें मौजूद ऐंटीऑक्सीडेंट, विटामिन, मिनरल्स आदि तत्व इसे बेहद फायदेमंद बनाते हैं। इसके गुणों को जानने के बाद आप कम से कम इन सर्दियों में मूंगफली का सेवन तो ज़रूर करेंगे ही।

सिट्रस फ्रूट

संतरा हो या नींबू, इनमें ढ़ेर सारा विटामिन सी होता है जिससे शरीर को पोषण और फ्लेवीनॉइड मिलता है। यह शरीर को बीमारियों से लड़ने में मदद करता है। साथ ही यह अच्छे कोलेस्ट्रॉल को भी बढ़ाता है। यह शरीर को गर्म रखने में मदद करता है।

बादाम

बादाम में सर्दी के मौसम से लड़ने की शक्ति होती है। इसका नियमित सेवन कई बीमारियों से बचाव कर सकता है। बादाम खाने से याद्दाश्त बढ़ती है, लेकिन यह अन्य कई रोगों से भी हमारी रक्षा करता है। इसके सेवन से कब्ज की समस्या दूर हो जाती है, जो सर्दियों में सबसे बड़ी परेशानी होती है। बादाम में डायबिटीज़ को नियंत्रित करने का गुण भी होता है।

क्या खाने से रखें परहेज

बहुत ज़्यादा घी-तेल से बनी चीज़ें न खाएं।
अपने खाने में लाल मिर्च का ज़्यादा इस्तेमाल न करें।
आइसक्रीम, कोल्डड्रिंक और फ्रिज के पानी से बचें।

इस मौसम में क्या खाएँ

हल्का और सुपाच्य भोजन करें। साथ ही वह ताजा और गरम होना चाहिए।
अपने भोजन में तरल पदार्थों की मात्रा बढ़ाएँ, आपको शीघ्र स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।
अगर आपके घर में किसी को सर्दी-जुकाम हो तो आप अपने घर में जो भी खाना बनाएं, उसमें बड़ी इलायची, लौंग, काली मिर्च, तेज-पत्ता और अदरक जैसे गरम मसालों का इस्तेमाल पर्याप्त मात्रा में करें। इस मसालों में सर्दी जुकाम ठीक करने की क्षमता होती है।

गाजर

गाजर खाने से त्वचा स्वस्थ रहती है, आँखों की रोशनी बढ़ती है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इससे सर्दियों में शरीर को ठंड नहीं लगती। यह एक गर्म आहार है, जिसे आपको ज़रूर खाना चाहिए।

फतेहपुर-उ.प्र.। राजयोग शिविर कार्यक्रम के दौरान राज्यमंत्री राम बहादुर सिंह यादव को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. नीरू।

रुड़की-उत्तराखण्ड। अम्बुजा सीमेंट लि. में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' कार्यक्रम में 'तनाव मुक्ति के लिए राजयोग का महत्व' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् डायरेक्टर राजीव कुमार शर्मा तथा एच.आर. धर्मेश शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सोनिया।

देवघर-झारखण्ड। प्रजापिता ब्रह्माबाबा की पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. रीता, डॉ. राजेश सिन्हा, डॉ. एन. सत्यम, डॉ. चौधरी, ब्र.कु. मीतू, गोविंद मुंदड़ा, सत्यनारायण भाई, गोपाल भाई, सुनील भाई तथा अन्य।

कोटद्वार-पौड़ी गढ़वाल(उत्तराखण्ड)। प्रजापित ब्रह्माबाबा की पुण्य स्मृति दिवस के कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित हैं ग्राम प्रधान सुनीता बहन, समाज सेविका सुष्मा जखमोला, ब्र.कु. ज्योति तथा अन्य।

अजगर वहार-छ.ग.। राष्ट्रीय युवा दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शा.हाई स्कूल में आयोजित परिचर्चा में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. आशा।

कुचामन-नागौर(राज.)। प्रजापित ब्रह्माबाबा की पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित करने के पश्चात् गणमान्य अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता।

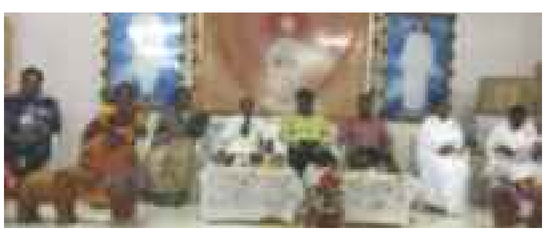

तुमसर-महा.। नवनिर्वाचित नगराध्यक्ष प्रदीप पडोळे के स्वागत कार्यक्रम में मंचासीन हैं पडोळे जी, ब्र.कु. शक्ति, प्रेमप्रकाश भाई,नागपुर, लायंस अध्यक्ष मीरा भट्ट, गीता कोंड़ेवार, शंकर जैसवाल तथा अन्य।

मेडिटेशन कर बनाया वर्ल्ड रेकॉर्ड

एक लाख नौ हज़ार आठ सौ लोगों ने किया एक साथ मेडिटेशन

ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके को वर्ल्ड रेकॉर्ड का सर्टिफिकेट प्रदान करते हुए 'वंडर बुक ऑफ रेकॉर्ड इंटरनेशनल,लंडन' की भारत की अध्यक्षा डॉ. स्वर्णश्री गुर्रम।

अहमदनगर-महा.। महाराष्ट्र के नंबर वन मराठी न्यूज़पेपर 'दैनिक सकाळ' द्वारा अहमदनगर के शेवगाव में आयोजित हरिनाम सप्ताह में एक साथ एक लाख नौ हज़ार आठ सौ लोगों ने राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास किया। इसको लंडन के वंडर बुक ऑफ रेकॉर्ड्स में शामिल किया गया है।

शेवगाव में हरिनाम सप्ताह के समापन के अवसर पर एक साथ चार वर्ल्ड रेकॉर्ड का आयोजन किया गया। जहाँ पच्चीस हज़ार लोगों ने नेत्रदान के फॉर्म भरके दिए और एक लाख नौ हज़ार आठ सौ लोगों ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सिखाए जाने वाले राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास किया। इस वर्ल्ड रेकॉर्ड का संयोजन ब्रह्माकुमारीज़ के ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके ने किया ।

एक लाख नौ हज़ार आठ सौ लोगों का मार्गदर्शन करते हुए ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके ने कहा कि आज प्रत्येक व्यक्ति सुख, शांति, आनंद, प्रेम की खोज व्यक्ति और वस्तुओं में कर रहा है। वास्तव में सुख, शांति, आनंद, प्रेम, यह हमारी निजी संपत्ति है, लेकिन स्वयं का परिचय न होने के कारण हम सच्चा सुख, सच्ची शांति, सच्चा आनंद, सच्चे प्रेम का अनुभव नहीं कर पा रहे हैं। वास्तव में हम सभी आत्माएं हैं और इस विशाल सृष्टि रूपी रंगमंच पर अपना-अपना किरदार निभा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि स्व-अनुभूति की तकनीक के द्वारा परमात्म अनुभूति के साथ लिंक करने की कला आ जाती है। तब तनाव, दुःख, अशांति हमारे जीवन से विदा होने लगते हैं, और तब सुख, शांति और सुकून भरे जीवन का आगमन होता है।

डॉ. दीपक ने कहा कि ये सब करने के लिए सुबह उठने के बाद तुरंत पंद्रह मिनट एक शांत जगह पर बैठकर अपने आप से वार्तालाप कर अपने भीतर छिपी हुई शक्तियों के बारे में जानना, समझना व उसे कार्य व्यवहार में उपयोग करना, ये हमारे जीवन का नित्य कर्म होना चाहिए। तब ही हमारे जीवन की यात्रा सुखदायी और शांतिमय बन सकती है। ये सब होगा राजयोग से। राजयोग के माध्यम से ये कला हम अर्जित कर सकते हैं।

अंत में ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके ने सभी को राजयोग मेडिटेशन कराया। जहाँ एक लाख दस हज़ार लोगों ने शांति की अनुभूति की। वर्ल्ड रेकॉर्ड का परिक्षण करने के लिए लंडन के 'वंडर बुक ऑफ रेकॉर्ड्स इंटरनेशनल' की भारत की अध्यक्षा डॉ. स्वर्णश्री गुर्रम उपस्थित थीं। इस सुखद क्षण को उन्होंने वर्ल्ड रेकॉर्ड में शामिल करने की घोषणा करते हुए सर्टिफिकेट प्रदान किया।

विश्व शांति हेतु प्रार्थना समारोह

लॉस एंजेलिस। अमेरिका में लॉस एंजेलिस में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ को दक्षिणी व उत्तरी बुद्धिस्ट, कैथोलिक, क्रिश्चन, जेविस, हिन्दु तथा इस्लाम आदि धर्म के धार्मिक नेताओं के साथ साथ सामूहिक रूप से पूरे विश्व के लिए शांति, सामाजिक समरसता के लिए एक सामूहिक प्रार्थना हेतु सम्मिलित किया गया। यह सम्मेलन लॉस एंजेलिस में बौद्ध धर्म मंदिर में हुआ। यह समारोह मुख्य रूप से बौद्ध धर्म के वार्षिक समारोह के साथ जुड़ा हुआ था, जिसमें वे चाहते थे कि हम सभी अलग-अलग धर्म को मानने वाले लोग एक साथ मिलकर पूरे विश्व के लिए प्रार्थना करें। इसमें सभी धर्म के नेताओं ने बारी-बारी से अपने विचार रखे। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से ब्र.कु. गीता ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हमारी प्राकृतिक और धार्मिक नेचर आत्मा की शांति है। उन्होंने सबको इस चीज़ के लिए प्रेरित किया कि यदि हम अपने मन के अंदर शुद्ध विचारों का बीज बोयें तो उसके चारो तरफ वही प्रकाश फैलेगा। उन्होंने सभी को सामूहिक ध्यान भी कराया और सबको हल्केपन की महसूसता भी हुई। इस समारोह में तीन सौ से भी अधिक लोग शामिल हुए।

बौद्ध धर्म के वार्षिकोत्सव पर बौद्ध धर्म मंदिर में सम्मेलन के पश्चात् समूह चित्र में अन्य धार्मिक नेताओं के साथ ब्र.कु. गीता।

स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन

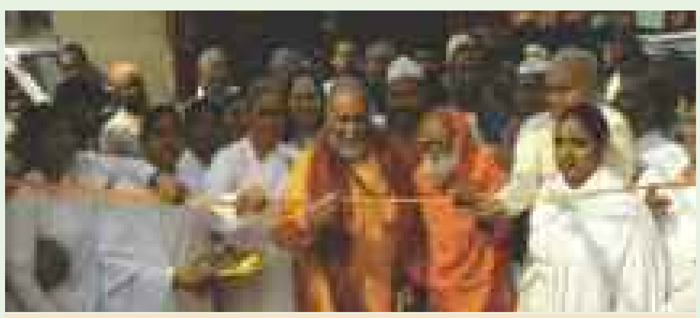

शिविर का उद्घाटन करते हुए स्वामी जयदेवा नंद सरस्वती योगी जी महाराज, सवामी शिवानंद जी महाराज, अरुण प्रकाश तिवारी, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. माधुरी, डॉ. अनीता सूद, शदाकत हुसैन, ब्र.कु. गिरिजा, ब्र.कु. मिथलेश, ब्र.कु. सुनीता, खुशी दूबे, गुरुवचन सिंह, पप्पन मिया व अन्य।

वीवीगंज-फर्रुखाबाद। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मेला रामनगरिया में शिविर का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन अवसर पर बद्रीनाथ धाम से आये स्वामी जयदेवा नंद सरस्वती योगी जी महाराज ने कहा कि समय के साथ बदलते हालातों में समायोजन करते हुए अपने ख्यालातों को बदलें। उन्होंने कहा कि एक हाथ से कर्म करें एवं दूसरे से धर्म, श्रेष्ठ गुणों को पकड़ कर रखें, तभी मन को शांति मिलेगी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए स्वामी शिवानंद जी महाराज ने कहा कि स्वयं परिवर्तन से ही विश्व का परिवर्तन होता है, उसका ही प्रभाव दूसरे पर पड़ता है और हमारी शक्तियों का विकास होता है। उन्होंने कहा कि अपने माँ-बाप की सेवा पूर्ण सम्मान के साथ करनी चाहिए, अगर तुम किसी दूसरे की सेवा नहीं कर सकते हो तो अपनी सेवा कराने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है।

व्यापार मंडल के प्रदेश उपाध्यक्ष अरुण प्रकाश तिवारी ददुआ ने कहा कि बिना सत्संग के विकास नहीं हो सकता है। इसलिए सभी को संतों का सत्संग सुनना चाहिए।

ब्र.कु. माधुरी ने संस्था का परिचय दिया तथा संस्था द्वारा चल रहे ईश्वरीय सेवाओं से भी सभी को अवगत कराया। इस मौके पर डॉ.अनीता सूद, शदाकत हुसैन, ब्र.कु. गिरिजा, ब्र.कु. मिथलेश, ब्र.कु. सुनीता, खुशी दूबे, गुरुवचन सिंह, पप्पन मियाँ, सुरेन्द्र सोमवंशी आदि ने भाग लिया। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू ने आभार व्यक्त किया।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org, mediabkm@gmail.com, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेयबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 3rd Feb 2017
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।